1

Sat saiye

सतसई

अर्थात्

श्री महाराज परमाचार्य्य गोस्वामी
तुलसीदास कृत नीति शास्त्र में सात
सौ दोहावली

जिसको

श्रीयुत परम प्रवीण गुण ग्राहक
गुणियुत सुखदायक मुन्शी नवलकिशोर
अवध समाचार सम्पादक नीतिज्ञ ने हिन्दी
भाषानुरागियों को राजनीति में आरूढ़
कराय सकलोपाधि से निर्द्वन्द्वता के हेतु
अपने पण्डितों से यथा विधि शुधवाय

लखनऊ

निज यन्त्रालय हजरतगञ्ज में छपवाया

सन् १८७३ ई०

1873

1 Satsaye

सतसई

अर्थात

श्री महाराज परमाचार्य्य गोस्वामी
तुलसी दास कृत नीति शास्त्र में सात
सौ दोहावली

जिसको

श्रीयुत परम प्रवीण गुण ग्राहक
गुणियुत सुखदायक मुन्शी नवलकिशोर
अवध समाचार सम्पादक नीतिज्ञ ने हिन्दी
भाषानुरागियों को राजनीति में आरूढ़
कराय सकलोपाधि से निर्द्वन्द्वता के हेत
अपने पण्डितों से यथा विधि शुधवाय

लखनऊ
निज यन्त्रालय हज़रत गञ्ज में छपवाया

सन् १८७३ ई०

1828

6532. Price R./3/=

NO 3033 JAMMOO

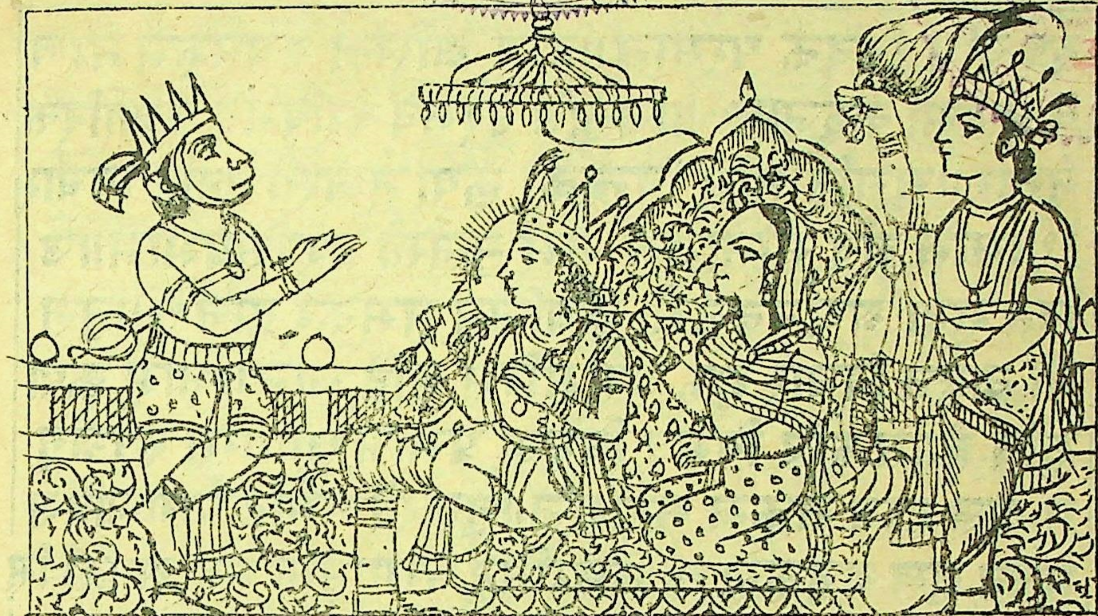

श्रीगणेशाय नमः नमो नमो श्रीराम प्रभु परमातम पर धाम॥ जेहि सुमिरत सिध होतहैं तुलसी जनमन काम१ रामबाम दिसि जानकी लषन दाहिनी वोर॥ ध्यान सकल कल्यान कर तुलसी सुर तरु तोर॥२॥ परम पुरुष परधाम वर जापर अपर नआन॥ तुलसी सोसमुझत सुनत राम सोई निर्वान।३। सकल सुषद गुनजासु सो राम कामना हीन॥ सकल काम प्रद सर्वहित तुलसी कहहिं प्रवीन४ ॥ जाके रोमरोम प्रति अमित अमित ब्रह्मंड॥ सो देखत तुलसी प्रगट अमल सुअचल प्रचंड।५। जगत जननि श्री जानकी जनक राम सुभरूप॥ जासुकृपा अतिअघहरनि करनि विवेक अनूप ६॥ तातमातु परजासुके तासु नले सकलेस॥ तेतुलसी तजिजात किमि तजिघर तरपरदेस· ७॥ पिता विवेक निधानवर मातु दयाजुत नेह॥ तासु सुवन किमिपायहै अनतअटन तजिगेह ८॥ बुद्धिविनै गति हीन सिसु सुपथ कुपथ गतजान॥ जननि जनक तेहि किमितजैं तुलसी सरिस अजान ९॥ मात तात सियराम

रूष बुधि विवेक परमान॥हरत अखिल अघलखन नर तव तुलसी कछु जान१०॥जिन्हते उदभव करविभव ब्रह्मादिक संसार॥सुगति तासु तिन्हकी कृपा तुलसी वदहि विचार११॥ससि रवि सीताराम नभ तुलसी उर सिप्रमान॥उदित सदा अथ वदनसो कुवलित तमकर हान१२॥तुलसी कहत विचार गुरु रामसरिस नहिं आन॥जासु कृपा सुचि होति रुचि विसद विवेक प्रमान१३॥राम रूपअनूप अल हरत सकल मलमूल॥तुलसी मर्महि योग लहि उपजत सुख अनुकूल१४॥रेफरमित परमातमा सह अकार सिय रूप॥दीरघ मिलि विधि जीवद्व तुलसी अमल अनूप१५॥अनुस्वार कारन जगत जीकर करन मकार॥मिलत अकार मकारसों तुलसी हरदातार१६॥ज्ञान विराग भक्ति सह मूरति तुलसी पेषि॥वरनत गति मति अनुहरत महिमा विसद विसेषि१७॥नाममनोहर जानि जिय तुलसी करि परमान॥वरन विपर्जैं भेदतें कहौ सकल सुभजान१८॥तुलसी सुभकारन समुझि गहत रामरसनाम॥असुभ हरत सुचि सुभकरन भक्ति ज्ञान गुनधाम१९॥तुलसी राम समान वर सपनेहु अपर न आन॥तासु भजन रति हीन अति चाहसि गति परमान२०॥अहिर सनायन धेनुरस गणपति द्विज गुरुवार॥माधव सितसिय जनम तिथि सतसैया औतार२१॥भरम हरन अति अमित विधि तत्व अर्थ कवि रीति॥संकेतिक सिद्धांत मत तुलसी वदन विनीति२२॥विमल बोध कारन सुमति सतसैया सुख धाम॥गुरुमुख पढि गतिपाइहै विरलि भक्ति अभिराम२३॥मनभय जर सनलाग युत प्रगट छन्द यत होइ॥सोघटना सुभदा

सदा कहत सुकवि सबकोइ २४॥ जलसमान ततवान ल
घु अपरवेद गुरुमान॥ संजोगादि विकल्प पुनि पढ़त
अंत कह जान २५॥ दीरघ लघु करि तहंपढव जहँसुखलहि
विश्राम॥ प्राकृत प्रगट प्रभाव इह जनित बुधाबुध वाम।
२६॥ द्वद गुरु सीता सार गण राम सेगुरु लघु होइ॥ लहुगु
रु रमा प्रतच्छ गन जुगलहु हरगन सोइ २७॥ सहस नाम
मुनि भनित सुनि तुलसी वल्लभ नाम॥ सकुचति यह ह
सि निरखि सिय धरम धुरंधर राम २८॥ दम्पति रस रसनाद
सन परिजन वदन सुगेह॥ तुलसी हरहित वरन सिसु सं
पति सरल सनेह २९॥ हिय निर्गुन नैनन सगुन रसना-
रामसुनाम॥ मनहु पुरट संपुट लसत तुलसी ललित-
ललाम॥ ३०॥ प्रभु गुनगान भूषन वसन वचन विसेष
सुदेस॥ राम सुकीरति कामिनी तुलसी करतव केस
३१॥ रघुवर कीरति तिय वदन इव कहै तुलसी दास॥ स
रद प्रकास अकास छवि चारु चिबुक तिल जासु॥ ३२
तुलसी सोभत नषत गन सरद सुधाकर साथ॥ मु-
क्ता कालर फलक जनु राम सुजस सिसु हाथ॥ ३३॥
आतम मध्य विवेक विनु राम भजत अलसात॥ लो
क सहित परलोककी अव सवि नासी बात॥ ३४॥ बक
मराल मानस तजै चंद सीत रवि धाम॥ मोर मदादिक
जौंतजै तुलसी तजै नराम॥ ३५॥ आसन दृढ आहार
दृढ सुमति ज्ञान दृढ होय॥ तुलसी विना उपासना वि
न दुलहेकी जोय ३६॥ रामचरन अवलम्ब विनु परमारथ
की आस॥ चाहत वारिद बुंद गहि तुलसी चढन अका
स ३७॥ रामनाम तरुमल रस अष्टपन फलएक॥ जुगल सं

त सुभ चारि जग वरनत निगम अनेक॥३८॥राम काम
तरु परि हरत सेवत कलि तरु ठूँठ॥स्वारथ परमारथ चह
त सकल मनोरथ कूँठ॥३९॥तुलसी केवल कामना राम
चरित आराम॥निसि चर कलि करि निहत तरु मोहि क
हत विधि वाम॥४०॥स्वारथ परमारथ सकल सुलभ
एकही वार॥द्वार दूसरे दीनता उचित न तुलसी तोर॥
४१॥हित सन हित रति राम सन रिपु सन वैर विहाव॥उ
दासीन संसार सन तुलसी सहज सुभाव॥४२॥तिलपर
राखै सकल जग विदित विलोकत लोग॥तुलसी महिमा
रामकी को जग जानन जोग॥४३॥जहाँ राम तहँ काम
नहिं जहाँ काम नहिं राम॥तुलसी कबहीं होत नहिं रवि
रजनी इक ठाम॥४४॥राम दूर माया प्रबल घटति जानि
मन माहिं॥बढ़ति भूरि रवि दूरि लखि सिर पर पगु तर
छाहिं॥४५॥सम्पति सकल जगत्त की स्वासा सम नहिं
होय॥स्वास सोई तजि राम पद तुलसी अलगान खोय ४
६॥तुलसी सो अति चतुरता राम चरन लौलीन॥परम
न परधन हरन कहँ गनिका परम प्रवीन॥४७॥चतुराई
चूल्हे परै जम गहि ज्ञानहि खाय॥तुलसी प्रेम न राम पद
सब जर मूल नसाय॥४८॥प्रेम सरीर प्रपंच रुज उपजी
वड़ी उपाधि॥तुलसी भली सोवैदई वेगि वांधई व्याधि
॥४९॥राम विटप तर विसद वर महिमा अगम अपार॥
ताकहँ जहँ लगि पहुँचैहै ताकहँ तहँ लगि डार॥५०॥९
तुलसी कोसल राज भजु जनि चितवै कहु ओर॥पूरन॰
राम मयंक मुख करु निज नयन चकोर॥५१॥ऊंचे नी
चे कहुँ मिलै हरिपद परम पियूष॥तुलसी काम मयूषतें

लायो कौनेउ रूष॥५१॥स्वामी होनो सहजहै दुर्लभ हो
नो दास।गाडर लाये ऊनको लागी चरै कपास॥५२॥चलब
नीति मग राम पद प्रेम निबाहब नीक॥तुलसी पहिरियं
सोबसन जोनध पारन फीक॥५४॥तुलसी राम कृपालते
कहि सुनाव गुन दोष॥होउ दूबरी दीनता परम पीन संतोष
॥५५॥सुमिरन सेवन रामपद रामचरन पहिचान॥ऐसेहुं ला
भन ललक मन लौ तुलसी हितहान॥५६॥सब संगी बाध
क भये साधक भए नकोइ॥तुलसी राम कृपालतें भलीहोय
सोहोय॥५७॥तुलसी मिटैन कल्पना गये कल्पतरु छाँह
॥जबलगि द्रवै नकरि कृपा जनक सुताको नाँह॥५८॥बि
नल बिलग सुख निकट दुख जीवन सबै सुरीति॥रहित रा
स्निये रामकी तजेतेंउ चित अनीति॥५९॥जाय कहब कर
तूति बिनु जाय जोग बिन छेम॥तुलसी जाय उपाय
सब बिना राम पद प्रेम॥६०॥तुलसी रामहि परिहरै नि
पट हानि सुनु मोद॥जिमि सुरसरि गत सलिल बर सु
रा सरिस गंगोद॥६१॥हरे चरहिं तापहिं बरे फरे पसारहिं
हाथ॥तुलसी स्वारथ मीत जग परमारथ रघुनाथ॥६२
॥तुलसी खोटे दासकर राखत रघुबर मान॥ ज्यों मूरख
पूरोहि तहि देत दान जज मान॥६३॥ ज्यों जग बैरी
मीन को आपु सहित परिवार॥ त्यों तुलसी रघुनाथ बिन
आपन दसा बिचार॥६४॥ तुलसी राम भरोस सिर लि
पाप धरि मोट॥ ज्यों बिभिचारी नारि कहं बड़ी [illegible]॥तु
वोट॥६५॥स्वामी सीता नाथ जी तुम लगि मैं [illegible] ६॥ तुलसी
लसी कारा जहाज़ को सूकन और नटेर
असेर पति सांहै
सब छल छांड़िके कीजे राम सने

कहा जिन देखी सब देह॥६७॥ सबही को परखे लखे बहु
न कहे का होय॥ तुलसी तेरो राम तजि हित जग और
न कोय॥६८॥ तुलसी हमसों राममें भलो मिलो है सूत॥
छाड़े बनै न संग्रहे ज्यों घर माहँ कपूत॥६९॥ कोटि विघ
न संकट विकट कोटि सत्रु जो साथ॥ तुलसी बल नहिं
करि सकै जो सुहृद रघुनाथ॥७०॥ लगन महूरत जोग
बल तुलसी गनत न काहि॥ राम भये जेहि दाहिने स
बै दाहिने ताहि॥७१॥ प्रभु प्रभुता जाकहँ दई बोल स
हित गहि बाँह॥ तुलसी ते गाजत फिरहिं राम छत्र की
छाँह॥७२॥ साधन साँसति सब सहत सुमन सुखद फ
ल लाहु॥ तुलसी चातक जलद की रीझि बूझि बुध का
हु॥७३॥ चातक जीवन जलद कहँ जानत समय सुरी
ति॥ लखत लखत लखि परत है तुलसी प्रेम प्रतीति॥७
४॥ जीव चरा चर जहँ लगे है सब को प्रिय मेह॥ तु-
लसी चातक मन बसो घन सों सहज सनेह॥७५॥ डोलत
विपुल विहंग बन पियत पोखरी बारि॥ सुजस धवल
चातक नवल तोर भुवन दस चारि॥७६॥ मुख मीठे मा
नस मलिन कोकिल मोर चकोर॥ सुजस ललित चा
तक चलित रहो भुवन भरि तोर॥७७॥ बासत डोलत
है नहीं तजि घर अनत न जात॥ तुलसी चातक भक्त
चा उपमा देत लजात॥७८॥ तुलसी तीनों लोक महँ
दूसरे ही को माथ॥ सुनियत जासु न दीनता किये
चानि॥ जाँ ॥७९॥ प्रीति पपीहा पयद की प्रगट नई पहि
॥८०॥ ऊँची जान लगान अधीन इन किये कनौड़ो आन
पीहरा नीचो पियत न नीर॥ के

जाँचै घनस्याम सों कै दुख सहै सरीर॥८१॥कै बरषै घ
न समय सिर कै भरि जनम निरास॥तुलसी चातक जा
चकहिं तक निहारै आस॥८२॥चढ़त न चातक चित कब
हुँ प्रिय पयोद के दोष॥याते प्रेम पयोधि बर तुलसी जोग
न जोष॥८३॥तुलसी चातक माँगनो एक एक घन दानि॥
देत सो भू भाजन भरत लेत घूट भरि पानि॥८४॥होय
अधीन जाचत नहीं सीस नाय नहिं लेय॥ऐसे मानी
माँगना नहिं को बारिद बिन देय॥८५॥पवि पाहन दामि
नि गरज झरि झकोर खर खीझि॥दोषन प्रीतम रोष ल
खि तुलसी रागहि रीझि॥८६॥कौन नियावै जगत मैं
महँ जीवन दायक पानि॥भयो कनौड़ो चातकहिं
पयद प्रेम पहि जानि॥८७॥मान राखिबो माँगिबो
पिय सो सहज सनेह॥तुलसी तीनो तब फबै जब
चातक मत लेह॥८८॥तुलसी चातकही फबै मान
राखिबो प्रेम॥बक्र बूँद लखि स्वाति को निदरि निबा
हत नेम॥८९॥उपल बरषि गरजत तरजि डारत कु
लिस कठोर॥चितव कि चातक जलद तजि कबहुँ
आन की ओर॥९०॥बरषि परुष पाहन जलद पक्ष क
रै टूक टूक॥तुलसी तदपि न चाहिये चतुर चातकहि
चूक॥९१॥रटत रटत रसना लटी तृषा सूखि गो अंग
॥तुलसी चातक के हिये नित नूतन हित रंग॥९२॥
गंगा जमुना सरस्वती सात सिंधु भरिपूर॥तुलसी
चातक के मते बिन स्वाती सब धूर॥९३॥तुलसी चा
तक के मते स्वाती पिअत न पानि॥प्रेम तृषा बढ़ती

तजै स्वाती सुधि नहिं लेइ॥तुलसी सेवक वस कहा जौ साहेव नहिं देइ॥९५॥आस पपीहा पयद की सुनु हो तुलसी दास॥जो अँचवै जल स्वाति को परिहरि वारह मास॥९६॥चातक घन तजि दूसरे जियत न नाइ नारि॥मरत न माँगे अर्ध जल सुर सरिहू को वारि॥९७॥व्याधा वधो पपीहरा परो गंग जल जाय॥चौंच मूंदि पीवै नहीं धिगपि वनो प्रन जाय॥९८॥वधिक वधो परि पुन्य जल उपर उठाई चौंच॥तुलसी चातक प्रेम पट मरत न लायो खौंच॥९९॥चातक सुतहि सिखाव नित आन नीर जनि लेहु॥ए हमरे कुल को धरम एक स्वाति सों नेह॥१००॥दरसन परसन आन जल विनु स्वाती सुनु तात॥सुनत चेचुवा चित चुभी समुझि नीति वर वात॥१०१॥तुलसी सुतसे कहत हैं चातक वारंवार॥तात न तरपन कीजियो विना वारि धर वारि॥१०२ वाजे चंगु गत चातकहि भई प्रेमकी पीर॥तुलसी-पर वस हाड मम परिहै पुहु मीनीर॥१०३॥अंड फोरि किय चेचुवा तुष परोनी हार॥गहि चंगुल चातक चतुर डारयो वाहिर वारि॥१०४॥होय न चातक पातकी जीवन दानित मूढ़॥तुलसी गति प्रहलाद की समुझि प्रेम पद गूढ़॥१०५॥तुलसी के मत चातकहि केवल प्रेम पियास॥पियत स्वाति जल जान जग तावत वारह मास॥१०६॥एक भरोसो एक वल एक आस विश्वास॥स्वाति सलिल रघुनाथ वर चातक तुलसी दास॥१०७॥ आल वाल मुक्ता हलनि ९

हिय सनेह तरु मूल॥ हेरु हेरु चित चातकहि स्वाति सलि
ल अनुकूल॥१०८॥ राम प्रेम बिन दूबरो राम प्रेम सह पी
न॥ विसद सलिल सरवर बसत जन तुलसी मन मीन॥
१०९॥ आप वधिक वर वेष धरि कहि कुरंगम राग॥ तुलसी जौं
मृग मन मुरै परै प्रेम पट दाग॥११०॥ इति श्री मद्गो सांई
तुलसी दास विरचितायां सप्तशतिकायां प्रेम भक्ति नि
र्देशो प्रथमः सर्गः॥१॥ ॥खेलत बालक व्याल संग पावक
मेलत हाथ॥ तुलसी सिसु पितु मातु इव राखत सि
य रघुनाथ॥१॥ तुलसी के बल राम पद लागौ स
रल सनेह॥ तौ घर घट बन बाट महं कतहुं रहे कि
न देह॥२॥ कै ममता करु रामपद कै ममता करु
हेल॥ तुलसी दो महं एक अब खेल छाडि छल खेल
॥३॥ कै तोहि लागहि राम प्रिय कै तु राम प्रिय होहि
॥दुइ महं उचित सुगम समुझि तुलसी करतव
तोहि॥४॥ रावनारि के दास सब कायर चलहिं कु
चाल॥ षरदूषन मारीच सम मूढ़ भये बस काल॥
५॥ तुलसी पति दरबार महं कमी वस्तु कछु नाहिं
॥ कर्म हीन कलपत फिरत चूक चाकरी माहिं॥६
॥ राम गरीब नेवाज हैं राज देत जन जानि॥ तुलसी
मन परिहरत नहिं घुर बिनिया की बानि॥७॥ घर
कीन्हे घर होत है घर छाड़े घर जाय॥ तुलसी घर
बन बीचही रहो प्रेमपुर छाय॥८॥ राम राम रटिबो
भलो तुलसी खतानखाय॥ लरिकाई ते पैरिबो धोखे
बूड़ि नजाय॥९॥ तुलसी बिलम न कीजिये भजि
लीजैं रघुबीर॥ तन तरकस ते जात हैं स्वास सारस॥

तीर॥१०॥राम नाम सुमिरत सुजस भाजन भये कु
जाति॥कुतरु कुसुर पुर राज वन लहत भुवन वि
ख्याति॥११॥नाम महातम साषि सुनु नरकी केति
क वात॥सरवर पर गिरिवर तरे ज्यों तरुवर के पा
त॥१२॥ज्ञान गरीवी गुन धरम नरम वचन नि
रमोष॥तुलसी कवहु न छाँडिये सील सत्य संतो
ष॥१३॥असन वसन सुत नारि सुख पापिहु के घर
होइ॥संत समागम राम धन तुलसी दुर्लभ दो
इ॥१४॥तुलसी तीरहि के वसे अवसि पाइये था
ह॥वेगहि जाय नपाइये सब सरिता अवगाह॥१५
॥डग अंतर मग अगम जल जल निधि जल सं
चार॥तुलसी करिया कर्म वस वूडत तरत नवार
॥१६॥तुलसी हरि अपमान तें होत अकाज समाज
॥राज करत रज मिलि गये सदल सकुल कुरु रा
ज॥१७॥तुलसी मीठे वचन तें सुख उपजत चहुँवो
र॥वसी करन यक मंत्र है परिहरु वचन कठोर॥
१८॥राम कृपा तें होत सुख राम कृपा विन जात॥जा
नत रघुवर भजन तें तुलसी सठ अलसात॥१९॥
सनमुख ह्वै रघुनाथ के देहु सकल जग पीठ॥त
जे केचुरी उरग कहँ होत अधिक अति डीठि॥२०
॥मरजादा हरहि रहे तुलसी किये विचार॥निकट
निरादर होत है जिमि हर सरि वर वारि॥२१॥राम
कृपा निधि स्वामि मम सब विधि पूरन कामप
स्वारथ परमारथ सब संत सुखद बल धाम॥२२॥६

तुलसी राम अजान नर किमि पावहिं परधाम॥२३॥तुलसी पति रति अंक सम सकल साधना सून॥ अंक रहित कछु हाथ नहिं सहित अंक दसगून॥२४॥तुलसी अपने राम कहँ भजन करहु इक अंक॥आदि अंत निरवाहि वो जैसे नव को अंक॥२५॥दुगुने तिगुने चौगुने पंच षट औ सात॥आठौते पुनि नौगुने नौके नौ रहि जात॥२६नौके नौ रहिं जात हैं तुलसी किए बिचार॥रमो राम इम जगत में नहीं द्वैत विस्तार॥२७॥तुलसी राम सनेह कर त्यागु सकल उपचार॥जैसे घटत न अंक नौ नवके लिखत पहार॥२८॥अंक अगुन आखर सगुन समुझउ भै प्रकार॥खोय राख आप भल तुलसी चारु विचार॥२९॥येहि विधि ते सब राम मय समुझहु सुमति निधान॥याते सकल विरोध तजु भजु सब समुझु नआन॥३०॥राम काम नाहीं न पुनि सकल काम करतार॥याहीते परमातमा अव्यय अमल उदार॥३१॥जो कछु चाहत सो करत भरत भरत गत भेद॥काहू सुखद काहू दुखद जानतहैं बुध वेद॥३२॥संत कमल मधु मास कर तुलसी वचन विचार॥जग सरवर नर भवन कर जानहु जल दातार॥३३॥एक स्रष्टि महँ जाहि विधि प्रगट तीन तर भेद॥सात्विक राजस तम सहित जानत हैं बुध वेद॥३४॥ताविधि रघुवर नाम महँ वर्तमान गुन तीन॥चंद भानु अपि अमल विधि हरि हर कहहिं प्रवीन॥३५॥अनल रकार अकार

रवि जानु मकार मयंक॥हरि अकार रकार विधि
मःमहेस निःसंक॥३६॥चनन ज्ञान कह दहनः
कर अनल प्रचंड रकार॥हरि अकार हर मोह तम
तुलसी कहहिं विचार॥३७॥त्रिविधि ताप हर ससि:
सतर जानहु मरम मकार॥विधि हरिहर गुन तीनि
को तुलसी नाम अधार॥३८॥भानु कृसानु मयंक
को कारन रघुबर नाम॥विधि हरि संभु सिरोमनी
प्रनत सकल सुख धाम॥३९॥अगुन अनूपम सगु
न निधि तुलसी जानत राम॥करता सकल जग
त को भरता सब मन काम॥४०॥छत्र मुकुट सम:
बिदु अल तुलसी जुगल हलंत॥सकल बरन सि
र पर रहत महिमा अमल अनंत॥४१॥रामानुज स
रगुन बिमल स्याम राम अनुहार॥भरता भरत
सो जगत को तुलसी लसत अकार॥४२॥राजत राज
स तानु जब बर धरनी धर धीर॥विधि विहरत अ
ति आसु करि तुलसी जन गन पीर॥४३॥हरन क
रन संकट सतर समर धीर बल धाम॥ममहेस अ
रि दवन बर लषन अनुज अरि काम॥४४॥राम
सदा सम सील धर सुख सागर पर धाम॥अजकारन
अद्वैत नित समतर पद अभिराम॥४५॥होन हार
सह जान सब बिसौ बीच नहिं होत॥गगन बिरह
करि बो कवै तुलसी पढ़त कपोत॥४६॥तुलसी हो
त सिषन हित तन गुन दूषन धाम॥भषन सिषि
न कवने कहौ प्रगट बिलोकहु काम॥४७॥गिरत
अंड संपुट अहन ज लाल पग अनयास॥अलल॰

सुवन उपदेस केहि जातसु उलटि अकास॥४८॥ विविध चित्र जल पत्र विच अधिक नून सम सूर॥ कव कौने तुलसी रचै केहि विधि पसम यूर॥४९॥ काक सुता वरह नाकरे यह अचरज वड वाय॥ तुलसी कहि उपदेस सुनि जनित पिता घर जाय॥५०॥ सुपथ कुपथ लीन्हे जनित स्वस्व भाव अनुसार॥ तुलसी सिख सत नाहि सिसु मूक कहन न मजार॥५१॥ तुलसी जानत हे सकल चेतन मिलत अचेत॥ कीट जात जड़ तिय निकट बिनहि पढे रति देत॥५२॥ होनहार सब अपुतैं वृथा सोच कर जोन॥ कंज मंटवा तुलसी सरगम कहहु अमेटन कौन॥५३॥ सुख चाहत सुख मैं बसत है सुख रूप बिसाल॥ संतत जा विधि मानसर कबहु न तजत मराल॥५४॥ नीति प्रीति जस अजस गति सब कहँ सुभ पहिचान॥ वस्ती हस्ती हस्तिनी देत नपति रति दान॥५५॥ तुलसी अपने दुषद तैं कोकहु रहत अजान॥ कौसकुंत अंकुर बनहि उपजत करत निदान॥५६॥ जथा धरनि सब बीजमैं नषत अकास निवास॥ तथा राम सबधर्म मय जानत तुलसी दास॥५७॥ पुहुमी पानी पावकहु पवनहु मांह समात॥ ताकहं जानत राम अपि बिनु गुरु किमि लखि जात॥५८॥ अगुन ब्रह्म तुलसी सोइ सगुन विसेषन सोइ॥ दुख सुख नाना भाँति को तेहि विरोधतैं होइ॥६०॥ सूरज थागन जीति अरि पलटि आ

रवि जानु सकार मयंक॥हरि अकार रकार विधि म:महेस निःसंक॥३६॥बतन ज्ञान कह रहन: कर अनल प्रचंड रकार॥हरि अकार हर मोह तम तुलसी कहहिं विचार॥३७॥त्रिविधि ताप हर ससि: सतर जानहु मरम मकार॥विधि हरिहर गुन तीनि को तुलसी नाम अधार॥३८॥भानु कृसानु मयंक को कारन रघुवर नाम॥विधि हरि संभु सिरोमनी प्रनत सकल सुख धाम॥३९॥अगुन अनूपम सगुन निधि तुलसी जानत राम॥करता सकल जगत को भरता सब मन काम॥४०छत्र मुकुट सम: विहि अल तुलसी जुगल हलंत॥सकल बरन सिरपर रहत महिमा अमल अनंत॥४१॥रामानुज सगुन विमल स्याम राम अनुहार॥भरता भरत सो जगत को तुलसी लसत अकार॥४२॥राजत राजस तानु जब वर धरनी धर धीर॥विधि विहरत अति आसु करि तुलसी जन गन पीर॥४३॥हरन करन संकट सतर समर धीर बल धाम॥ममहेस अरि दवन बर लषन अनुज अरि काम॥४४॥राम सदा सम सील धर सुख सागर परधाम॥अजकारन अद्वैत नित समतर पद अभिराम॥४५॥होन हार सह जात सब विमौ वीच नहिं होत॥गगन विरह करिबो कवै तुलसी पढ़त कपोत॥४६॥तुलसी होत सिखन हित तन गुन दूषन धाम॥भषन सिखिन कवने कह्यौ प्रगट विलोकहु काम॥४७॥गिरत अंड संपुट अरुन जनत पर अनयास॥अनल:

सुवन उपदेस केहि जातसु उलटि अकास॥४८॥ विविधि चित्र जल पत्र विच अधिक नून सम सूर॥ कव कौने तुलसी रचै केहि विधि पसम यूर॥४९॥ काक सुता वरह नाकोर यह अचरज वड वाय॥ तुलसी कहि उपदेस सुनि जनित पिता घर जाय॥५०॥ सुपथ कुपथ लीन्हे जनित स्वस्व भाव अनुसार॥ तुलसी सिखवत नाहि सिसु मूक कहन न मजार॥५१॥ तुलसी जानत है सकल चेतन मिलत अचेत॥ कीट जात वंड़ तिय निकट बिनहि पढे रति देत॥५२॥ होन हार सब आपुतें वृथा सोच कर जौन॥ कंज भ्रंगा तुलसी सरगान कहहु अमेटन कौन॥५३॥ सुख चाहत सुखमैं बसत है सुख रूप बिसाल॥ संतत जाविधि मानसर कबहु न तजत मराल॥५४॥ नीति प्रीति जस अजस गति सब कहँ सुभ पहिचान॥ वस्ती हस्ती हस्तिनी देत नपति रति दान॥५५॥ तुलसी अपने दुषद तें कोकहु रहत अजान॥ कीस कुंत अंकुर बनहि उपजत करत निदान॥५६॥ जथा धरनि सब बीजमैं नषत अकास निवास॥ तथा राम सबधर्म मय जानत तुलसी दास॥५७॥ पुहुमी पानी पावकहु पवनहु मांह समात॥ ताकहँ जानत राम अपि बिनु गुरु किमि लखि जात॥५८॥ अगुन ब्रह्म तुलसी सोई सगुन विवेकन सोइ॥ दुख सुख नाना भाँति को तेहि विरोध तें होइ॥६०॥ सूरज थागन जीति अरि पलटि आ

व चलि गेह॥ तिमि गति जानहि रामकी तुलसी संत सनेह॥६०॥ परमातम पद राम पुनि तीजे संत सुजान॥ जे जग महं विचरहि धरे देह विगत अभिमान॥६१॥ चौथी संज्ञा जीवकी सदा रहत रतकाम॥ ब्रह्मन सैंतन राम पद निसि बासर वस वाम॥६२॥ सुख पाये हरषत हँसत खींकत लहे विषाद॥ प्रगटत दुरत नितै परत केवल रत विस्वाद॥६३॥ नाना विध को कल्पना नाना विधि को सोग॥ सूक्षम औ अस्थूल तन कबहुँ तजत नहिं रोग॥६४॥ जैसे कुष्टी को सदा गलित रहत दोउ देह॥ विंदहु की गति तैसिये अंतरहू गति एह॥६५॥ त्रिधा देह गति एक विधि कबहूँ नागति आन॥ विविधि कष्ट पावत सदा निरखहिं संत सुजान॥६६॥ रामहिं जाने संतवर संतहि राम प्रमान॥ संतन केवल राम प्रभु रामहिं संत नज्ञान॥६७॥ सातें संत दयाल वर देहिं राम धन रीति॥ तुलसी यह जियजानिकै करियव हठि अति प्रीति॥६८॥ तुलसी संत सुअंब तरु फूलि फरहिं परहेतु॥ इतते वे पाहन हने उतते वै फल देत॥६९॥ दुख सुख दोनो धक सम संतनके मन माहिं॥ मेरु उदधि गति नकूर जिमि भार भोंजिबो नाहिं॥७०॥ तुलसी राम सुजान को गम जनावै सोइ॥ रामहि जानै रामजन आन कबहुं न होइ॥७१॥ सो गुरु राम सुनाम सम नहीं विममता लेस॥ ताकी कृपा क

रासतें रहेन कठिन कलेस॥७२॥गुरु कह तब समझै सुनै निज करतब करभोग॥कहत तब गुरु करतब करै मिटै सकल भव रोग॥७३॥सरना गत तेहि रामके जिन्ह दिय धीसियरूप॥जापद नी घर उदय भय नासै भ्रम तम कूप॥७४॥जापद पाये पाइये आनंदपद उपदेस॥संसै समन नसाय सब पावै पुनि न कलेस॥७६॥मेधा सीता सम समुझ गुरु विवेक सम राम॥तुलसी सिय सम सो सदा भयो विगत मगावाम॥७६॥आदि मध्य अवसान गति तुलसी एक समान॥तेई संत सरूप सुभ जे अतीत गति आन॥७७॥एई सुद्ध उपासना परा भक्तिकी रीति॥तुलसी यहि मग पगु धरै रहै रामपद प्रीति॥७८॥तुलसी विन गुरुदेवके कोंम जानै कहु कोय॥ जहंते जो आयो सोहै जाय जहाँ है सोय॥७९॥ अप गतष सोई अवनि सोपुनि प्रगट पताल॥कहौं जनम अपि मरन मपि समु कहि सुमति रसाल॥८०॥संग दोस तेभेद अस मधु मदि राम करंद॥गुरु गमते देखहिं प्रगट पूरन परमा नंद॥८१॥डाबर सागर कूपगत भेद दिखावै हेत॥है एकै दूजै नहीं दैत आनके हेत॥८२॥गुन गत नाना भाँति तेहि प्रगटत कालहि पाय॥जान जाय गुरु ज्ञानते विन जाने भरमाय॥८३॥तुलसी तरु फूलत फलत जाविधि कालहि पाय॥तैसे ही गुन दोष

तैं प्रगटत सबै सुभाय॥८४॥दोषहु गुनकी री
ति इह जानु अनल गति देषि॥तुलसी जानत
सो सदा जेहि विवेक सुविसेषि॥८५॥गुरु ते
आवत ज्ञानउर नासत सकल विकार॥जथा
निलै गति दीपकै मिटत सकल अंधियार॥
८६॥जद्यपि अवनि अनेक सुख तोयतामु रस
ताल॥संतत तुलसी मानसर तदपि नतजाहिं म
राल॥८७॥तुलसी तोरत तीर तरु मानस जहंस
विडार॥विगत नलिनि अलि मलिन जल सर
सरिहू वढिआर॥८८॥जोजल जीवन जगत को
परसत पावन जौन॥तुलसी सो नीचे ढरत ता
हि नेवारत कौन॥८९॥जोकरता है करम को
सो भोगत नहिं आन॥ववन हार लुनिहै सो
ई देनी लहै निदान॥९०॥रावन रावन कौ ह
त्यौ दोस रामकहं नाहिं॥निज हित अनहित
देखु किन तुलसी आपहि माहिं॥९१॥सुमिरु
राम भजु रामपद देखु राम सुनु राम॥तुलसी
समुझहु राम कहं अहनिस इह तव काम॥
९२॥रज अप अनल अनिल नभ जड जानत १
सव कोइ॥इह चैतन्य सदा समुझ कारज र
त दुष होइ॥९३॥निज रुत विलसत सो सर
दा विन पाये उपदेस॥गुरु पगु पाय सुमग
धरै तुलसी हरै कलेस॥९४॥सलिल सुक्र श्रो
णित समुझ पल अरु अस्थि समेत॥वालकु
मारजु वाजरा हैसो समुझ कर चेत॥९५॥ये

सिहि गति अवसानकी तुलसी जानतहेत॥ ता
ते यह गति जानि जिय अवि रलहरि चित चेत
॥९६॥ जाने राम स्वरूप अब तवपावै पद संत
॥ जन्म मरन पदसे रहित सुषमा अमल अनं
त॥९७॥ दुखदायक जाने भले सुखदायक भ
जि राम ॥ अब हमको संसार को सबविधि प्
रन काम॥९८॥ आपुहि मदको पानकरि आ
पुहि होत अचेत॥ तुलसी विविध प्रकार को
दुख भतपति यहि हेत।९९॥ जासों करत बि
रोध हठि कहु तुलसी को ज्ञान॥ सोतैं समनन
ज्ञात तब नाहि कहो सिमलान १००॥ चाहसि
सुख जेहि मारिके सोतो मारि नजाय॥ कौन
लाभ विषते वदलि ते तुलसी विषखाय॥१०१
॥ क्रोह द्रोह अघ मूलहै जानत कोकहु नाहि
॥ दया धर्म कारन समुझि कोहुव पावत नाहि
॥१०२ वनो वनायोहैसदा समुझ रहित नहिसूल
॥ अहन वरन केहि कामको वासबिना को फू
ल॥१०३ इति श्री मद्गोसाईं तुलसी दास विरचि
तायां सप्तसतिकायां उपासन परा भक्ति निर्देसो
नाम द्वितीयः सर्गः॥२॥❀॥३॥ ॥ जनक सु
ता दस जान सुत उरग ईस अमजौरि॥ तुल
सिदास दसपद परखि भवसागर गयो पौरि
॥१॥ तुलसी तेरे रोग हर तात मात गुरु देव ॥
ता नजि तोहि उचित, अब रुचित आन पद से
व॥२॥ तर्क विशेषि निषेध पति उर मानसु

सुपुनीत॥ बसत मरालन्ह रहित करि तेहि भनु पलटि विनीत॥३॥ सुक्रादिहि कल देहु दुक अंत सहित सुख धाम॥ दे कमला कल अंत कौ मध्य सकल सुख दाम॥४॥ बीज धनंजय रबि सहित तुलसी तथा सथंक॥ प्रगटत हानहि तमतमी सम चित रहत असंक॥५॥ रंजन कानन कौ कनद बंस विमल अवतंस॥ गंजन पुरहूत अरि सदल जग हित मान सहंस॥६॥ जग तें रहु छत्तीस होय राम चरन छत्तीन॥ तुलसी देखु विचारि हिय है यह मतो प्रवीन॥७॥ कंदिमदुनन छत्र हनि गनी अनुज तेहि कीन्ह॥ जेहि हरि करमनि मान हनि तुलसी तेहि पद लीन्ह॥८॥ सिला आयु मोचक चरन हरन सकल जंजाल॥ भरत करन सुख सिद्धि नर तुलसी परम कृपाल॥९॥ मरत विपति हर धर धरम धरा धरन बल धाम॥ सरन तासु तुलसी चहत बरन अखिल अभि राम॥१०॥ विहंग विचरैय तत्रि तय पति पति तुलसी तोर॥ ता सवि सुख सुख आति विसम सपनेहु होतन भोर॥११॥ तुतिय कोल राजिव प्रथम बाहुन निंश्चयसाहि॥ आदि एक कलदे भजहु बेद विदित गुन नाहि॥१२॥ बसत जहां राघव जलज तेहि सितिवो जहि संग॥ भजु तुलसी तेहि अरि सुपद करि उर प्रेम अभंग॥१३॥ भजहु तरनि अरि आदि कहं तुलसी आस्त

ज अंन॥पंचानन लहि पद्म मथि गहे विमल
मन संत॥१४॥वनिता सैल सुता सको तासु
जनमको ठाम॥तेहि भजु तुलसी दास हित प्रन
त सकल सुख धाम॥१५॥भजु पतंग सुत
आदि कहँ मृत्युंजय और अंतु॥तुलसी पुहु क
र जह्नु कर वरन पाँसु मिकँतु॥१६॥उलटे ता
सीता सुपति सोह जार मन मध्य॥एक सूनर
थ तनै कहँ भजसि नमन समरथ्थ१७॥द्वि
तिय तृतिय हर कास नहिं भजु तेहि तुलसी
दास॥काकासन आसन किये सासन लहे
उपास॥१८॥आदि द्वितिय औतार कहँ भजु
तुलसी नृप अंत॥कमल प्रथम अरु मध्य
सह वेद विदित मत संत॥१९॥जेहि नगन्यौ
कछु मान सह सुरपति अरि भो आस॥तेहि
पद सुचिता अवधि भव तेहि भजु तुलसीदास
॥२०॥नैन करन गुन धरन वर तावर वरन वि
चार॥चरन सतर तुलसी चहसि उचरन सरन
अधार॥२१॥भजु हरि आदिहि वाटिका भरित
राजिव अंत॥करिता पद विस्वास भव सरिता तरसि तुरंत
२२॥जड़ मोहन वर नादि कहँ सह चंचल चित चेत
भजु तुलसी संसार अहि नहि गहि करत अचेत॥
२३॥मरन अधिप वारन वरन दूसर अंत अगांर॥१
तुलसी दषु सह राग धर तारन तरन अधार॥२४॥
जौं उर विज चाहसि कटित तौकारि धटित उपाय॥
सुमन सवर वर और चरन सेवन सरल सुभाय।

॥२५॥ द्वितिय पयोधर परम धन वाम अंत जुत सोय॥ भजु तुलसी संसार हित यातें अधिक नकोय॥२६॥ पति पयोधि पावन पवन तुलसी करहु विचार॥ आदि द्वितिय अरु अंत जुत तामत लव निरधार॥२७॥ हंस कपट रस सहित गुन अंत आदि प्रथमंत॥ भजु तुलसी तजि वाम गति जेहि पद रत भगवंत॥२८॥ कनासमुकिक वरन हरहु अंत आदि जुत तार॥ श्रीकरसम हर वरन चर तुलसी सरत उबार॥२९॥ अंक दसा रस आदि जुत पांडु सुनु सह अंत॥ जानि सुवन सेवक सतर कीरहे कृपा पंत॥३०॥ कटिति सरवाहि विचारि हिय आदि वरन हर एक॥ अंत प्रथम स्वरादि भजहु जा उर तत्व विवेक॥३१॥ आदि चन्द्रचल सहित भजु तुलसी तजु काम॥ अघ गंजन रंजन सुजन भव भंजन सुख धाम॥३२॥९ विगति देह तनु जासु पति पद रति सहित सनेम॥ जदि अंत मनि चाहसि सुगति तदि तुलसी करु प्रेम॥३३॥ करता सुचि सुरसर सुता ससि सारंग महि जान॥ आदि अंत सह प्रथम युत तुलसी समुझु न आन॥३४॥ गिरिजा पति कल आदि दक हरि नछत्र सुधि जान॥ आदि अंत भजु अंत पुनि तुलसी सुचि मन मान॥३५॥ रितु पति पद पुनि पदिक जुत प्रथम आदि परलहु॥ अंत हरन

पद दुतिय महुं मध्य वरन सह नेहु॥३६॥ वाहन
मेघ सुमधु परव भरत नगर जुत जान॥ हरि
भरि सरित बिपर्ज्ज करि आदि मध्य अवसा
न॥३७॥ तुलसी उडुगान को वरन वनज सहि
त दोउ अंत॥ ताकह भजु संसै समन रहित प्र
ककल अंत॥३८॥ वारिज वारिज वरन वर व
नत तुलसी दास॥ आदि आदि भजु आदि पद
पाये परम प्रकास॥३९॥ भजु तुलसी कुलिसांतक
हं सह अगार तजि काम॥ सुख सागर नागर
ललित वली अली परधाम॥४०॥ चंचल सहि
तरु चंचला अंन अंत जुत ज्ञान॥ संत शास्त्र सं
मत समुझि तुलसी करु परमान॥४१॥ आदि
वसंत दकार दै आसै तासु विचार॥ तुलसी ता
सु सरन परे कासु न भयो उवार॥४२॥ धराध
रा धर वरन जुग सरन हरन भव भार॥ करन
सतर तर परम पद तुलसी परमाधार॥४३॥ ब
रन धनंजय सूनपति चरन सरन रति नाहिं
॥ तुलसी जग वंचक विहठि किये बिधाता अ
ताहि॥४४॥ तुलसी रजनी पूर्णिमा हार सहित
लखि लेहु॥ आदि अंत जुत जानि कहि तुलतर
सनल सनेहु॥४५॥ भानु गोत्र तिमिता सुप
ति कारन अति हिति जाहि॥ ज्ञान सुगति अ
जुत सुखसदन तुलसी मानत नाहि॥४६॥ भ
जु तुलसी औघादि कहं सहित तत्व जुत अंत
भवा युंजय जासु बल मन चल अचल करं

त॥४७॥देत कहा न्टप काजपर लेत कहा इत
राज॥ अंत आदि जुत सहित भजु जौंचाहसि
सुभ काज॥४८॥चंद्रवदनि भजु गुन सहित
समुझि अंत अनुराग॥तुलसी जौ यह बनप
रै तौतब पूरन भाग॥४९॥जिनके हरिवाहन ः
नहीं दधि सुत सुत जेहि नाहिं॥तुलसी तेनर
तुच्छहैं बिना समीर बनाहिं॥५०॥रबि चंचल
अरु रहल इव बीच सुबास विचारि॥तुलसि दा
स आसन करे अवनि सुता उर धारि॥५१॥बन
वनिता दृगकोपमा जुत करु सहित विवेक॥
अंत आदि तुलसी भजहु परि हरि सनकार टे
क॥५२॥उवी अंतहू आदि जुत कुल सो भीः
कसलादि॥कै विपजे ऐसहि भजहु तुलसी स
मन विषाद॥५३॥तौतोहि कह सब कोउ सुख
हृ करहि कहा तब पांच॥हरव तृतिय वारिज-
वरन तजब लीन सुतु सांच॥५४॥तजहु सदाः
सुभ आस अरि भजु सुमनस अरि काल॥स
जुमत हंस अवंतिका तुलसी विमल विसाल॥
५५॥एतवंत वर बरन जुग सेत जगत सब जान
॥वेत सहित सुमिरन करत हरत सकल अघः
खान॥५६॥मैत्री बरनय कार को सहसर आदिः
विचारि॥ पंच वर्ग गहि युत सहित तुलसीः
ताहि संभारि॥५७॥हलय ममध्य समान युतः
याते अधिक नआन॥तुलसी ताहि बिसारि सठ
भरमत फिरत भुलान॥५८॥कौन जाति सीता

6532.

सती को दुखदायक दुवाम ॥ कौ कहिये ससिकर दुखद सुखदायक को राम ॥ ५९ ॥ को शंकर गुर वाना वर शिव हरको अभिमान ॥ करताको अज जगत को भरता को हरि जान ॥ ६० ॥ सरवेय सराजीव गुन करु तेहि हद पहिचान ॥ पंच पवर्गहि जुत सहित तुलसी ताहि समान ॥ ६१ ॥ होत हरष का पाय धन विपति नजे का धाम ॥ दुखदा कुमति कुनारि तरअति सुखदायक राम ॥ ६२ ॥ वीर कवन सहमदन सर धीरकवन रतराम ॥ कवन कूर हरिपद विमुख कोकामी वसवाम ॥ ६३ ॥ कारन कोकंजीवको खगुन कह सव कोय ॥ जानतको तुलसी कहत सो पुनि आवन होय ॥ ६४ ॥ तुलसी वरन विकल्प को औचप त्रितिय समेत ॥ अव समुकै जद सरित नर समुकै साधु सचेत ॥ ६५ ॥ जासु आसु सरदेव को अरु आसनहरुवाम ॥ सकलदुखद तुलसी तजहु मध्य तासु सुखधाम ॥ ६६ ॥ चंचल तिय भजु प्रथम हरि जो चाहसि परधाम ॥ तुलसी कहहि सुजन सुनहु यही सयानप काम ॥ ६७ ॥ कुलिस धर्म जुग अंत जुत भजु तुलसी तजु काम ॥ असुभ हरन संसय समन सकल कला गुन धाम ॥ ६८ ॥ श्रीकर को रघुनाथ हर अनयस कह सव कोय ॥ सुखदा को जानत सुमति तुलसी समता होय ॥ ६९ ॥ वैर मूल हित हरवचन प्रेम

मूल उपकार॥ दोहा सरल सनेहमें तुलसी करै विचार॥७०॥ प्राण कवन गुरु लघु जगत तुलसी अवर न आन॥ घेष्ठाको हरिभक्ति सम एको लघु लोभ समान॥७१॥ बरन हितिय नासक निरै तुलसी अंतरसार॥ भजहु सकल श्रीकर सदन जनपालक खलसार॥७२॥ चप अंथस स्वर सहित गुनिय भजुत दुघद न आन॥ तुलसी हल जुतते कुसल अंतिकार सहजान॥७३॥ तुलसी यमगन वोधविन कहु किसि मिटै कलेस॥ तातै सदगुरु सरन गहु जाते पद उपदेस॥७४॥ भगन जगन कासो करसि राम अपन नहिं कोय॥ तुलसी पति पहिचान विन कोउ तुल कबहु न होय॥७५॥ तुलसी तगन विहीन नर सदा लगनके बीच॥ तिनहि जगन कैसे लहै पर सगन के कीच॥७६॥ इन्दु रवनि सुर देव ऋषि रुकुमिनि पति सुभ जान॥ भोजन दुहिता काक अलि आनंद असुभ समान॥७७॥ कोहित संत अहित कुटिल नासकको हित लोभ॥ पोषक सोषक दुखद अरि सोखक तुलसी छोभ॥७८॥ सदा नगुन पद प्रीति जेहि जासु नगानसम नाहि॥ जगनताहि नय जुत रहत तुलसी संसै नाहि॥७९॥ भगन भक्ति करु भरम तजि तगन सगन विधि होय॥ सगन सुभाय समुझि तजो भंजन दूषन कोय॥८०॥ श्रीराज आसन जूतजू ९

विहरत तीरसु धीर॥ जनु पाय मैनाग पद राजत श्रीरघुवीर॥८१॥ बाल छुटत नूतर निकट विहरत राम सुजान॥ तुलसी कर कमलन ललित लसत सरासनवान॥८२॥ मृदु मेचक सिररुह रुचिर सीस तिलक भ्रूवंक॥ धनुसर गहि जनु तहितजुत तुलसी लसत मयंक॥८३॥ हंस कमल विच वरन जुल तुलसी अति प्रिय जाहि॥ तीन लोक महं जोभजै लहै तासुफल नाहि॥८४॥ आदि महै अंतहु महै मध्यरहै तेहि जान॥ अनजानै जड़जीव सव समुझै संतसुजान॥८५॥ आदि रहै मध्ये रहै अंत दहै सोवात॥ राम विमुख के होतहै राम विमुखते जात॥८६॥ ललित वरन कटिकर ललित लसत ललित वनमाल॥ ललित विवुक द्विज अधरसह लोचन ललित विसाल॥८७॥ भरन हरन अर्थै अमल सहित विकल्प विचार॥ कह तुलसी मति अनुहरत दोहा अर्थ अपार॥८८॥ वीसिष्ठा दो अलंकार महं संकेतादि सुरीति॥ कहे वहुरि आगे कहव समुझव सुमति विनीति॥८९॥ कोस अलंकृत संधि गति मैत्री वरन विचार॥ हरन भरन सुविभक्ति भल कविहि अर्थ निरधार॥९०॥ देशकाल करता करम वुधि विद्या गतिहीन॥ तेसुर तरुतर दारदी सुरसरि तीर मलीन॥९१॥ देस काल गति हीनजे करता करम नज्ञान॥ तेपिसमर्थे तुलसी स्वान समान॥९२॥ अमगु पगु धरहिं तुलसी स्वान समान

धिकारी सब बोसरी भलो जानिबो मंद॥ सुधा सदन बसु वार हो चौथी अथवा चंद॥ ९३॥ नर बर नभ सर वर सलिल बिनै बनज बिज्ञान॥ सुमति सुक्तिका सारदा स्वाती कहहिं सुजान॥ ९४॥ समदम समता दीनता दान दयादिक रीत॥ दोष दुरित हर दर दरत रव रवि विमल विनीत॥ ९५॥ धरम धुरीन सुधीर धर धारनवर परपीर॥ धरा धरा धर सम अचल बचन नविचल सुधीर॥ ९६॥ चौंतिसके प्रस्तारमें अर्थ भेद परमान॥ कहहु सुजन तुलसी कहहिं या विधि ते पहिचान॥ ९७॥ वेद बिसम कबरनस तर सुतर रामकी रीति॥ तुलसी भरत न भरि हरत भूलि हरहु जनि प्रीति॥ ९८॥ बनते गुन कहे जानिये तातें द्रगादिगतीन॥ तुलसी यह जिय समुझि करि जग जित संत प्रबीन॥ ९९॥ चंद्र अनल नहि है कहूं झूठो बिना बिबेक॥ तुलसी ते नर समुझि हैं जिनहि ज्ञान रसएक॥ १००॥ सतसैया तुलसी सतर तमहर पर परदेत॥ दुरित अविद्या जन दुरित वर तुल सम करि लेत॥ १०१॥ इति श्री महा साईं जी तुलसी दास विरचितायां सप्तशतिका यांसं केत वक्रोक्ति राम रस बरननो नाम द्वितिय सर्गः॥ २॥ ॥ १॥ त्रिविधि भीति को सब्द वर विघटन लट परसान॥ कारन अविरल अलपियत तुलसी अविध भुलान॥ २॥ द्विगा भ्रम जाविध होत हैं

कौन भुलावत ताहि॥ जानि परत गुरु ज्ञानतैं सव जग संसै माहिं॥२॥ कारन चारि विचारवर बरनत अपर न आन॥ सदा सोक गुन दोषमै लखि न परत बिन ज्ञान॥३॥ इह कारन सव ताहि को यहि ते यह परमान॥ तुलसी मरम न पाइहौ बिन सदगुरु वरदान॥४॥ दिग भ्रम कारन चार ते जानहि संत सुजान॥ तिनकैसे लखि पाइहैं जे वहि बिसम भुलान॥५॥ सुख दुखकारन साभयो रसना को सुत वीर॥ तुलसी सोतब लखिपरै करै कृपा वर धीर॥६॥ अपने खोदे कूप महं गिरे जथा दुख होइ॥ तुलसी सुखद समुझि हिये रचत जगत सब कोइ॥७॥ ताविधि ते अपनो बिभौ दुखसुख देकरतार॥ तुलसी कोउ कोउ संतवर कीन्ह बिरंचि विचार॥८॥ रसना ही के सुत अपर करत करन तर प्रीति॥ तेहि पाछे जग सब लगे समुझ नरीत अरीति॥९ माया मन जिउ ईस भनि ब्रह्मा बिस्नु महेस॥ सुर देवी औ ब्रह्म लौं रसना सुत उपदेस॥१०॥ वरन धार वारिध अगम को गम करै अपार॥ जन तुलसी सत संगबल पाये बिसद विचार॥११॥ गहि सुबेल बिरले समुझि वहि गये अपर हजार॥ कोटि नबूडे खबरि नहिं तुलसी कहहिं विचार॥१२॥ श्रवन सुनत देखन नयन तुल तन विविधि॥ न विरोध॥ कहहु कही केहि मानिये केहिविधि

धि करिय प्रबोध॥१३॥ अवनात्मक ध्वन्यात्मक वरनात्मक विधि तीन॥त्रिविध शब्द अनुभव अगम तुलसी कहहि प्रवीन॥१४॥कह न सुनत आदिहि बरन देखत बरन विहीन॥दिष्टि मान चर अचर गन एकहि एक नलीन॥१५॥पंच भेद चर गन विपुल तुलसी कहहिं विचारि॥नर पसु स्वेदज खग कृमी बुध जनमत निरधारि॥१६॥ अति विरोध तिन्नमहँ प्रचल प्रगट परत पहिचान॥स्थावर गति अपर नहिं तुलसी कहहिं प्रमान॥१७॥रोम रोम ब्रह्मांड बहु देखत तुलसीदास॥बिन देखे कैसे कोऊ सुनि मानै विश्वास॥१८॥ वेद कहत जहँलगि जगत तेहिते अलग न आन॥तेहि अधार वे वहरत लघु तुलसी परमप्रमान॥१९॥सरसप सूझत जासु कहँ नाहि सुमेरु असूझ॥कहेउ नसमुझत सो अबुध तुलसी विगत विसूझ॥२०॥कहत अवर समुझत अवर गहत तजत कछु और॥कहेउ सुनै समुझत नहीं तुलसी अति मति बोर॥२१॥देखो कहै अदेष इव अनदेखो विस्वास॥कठिन प्रबलता मोह की जल कह परम पियास॥२२॥सोई सेमर सोद सुवा सेवत पाद वसंत॥तुलसी महिमा मोहकी विदित बखानत संत॥२३॥सुन्यो सवन देख्यो नयन संसै समन समान॥तुलसी समता असमभौ कहत आ

नकहैं आन॥२४॥वसहा भव अरि हित अहि
त सोपिन समुकत हीन॥तुलसी हीन मली
न मति मानत परम प्रवीन॥२५॥भटकत
पर अद्वैतता अटकत ज्ञान गुमान॥सटक
त वितरन ते विहटि फटकत तिसु अभिमा
न॥२६॥जो चाहत तेहि विनु दुखित सुखित
रहित तेहि होइ॥तुलसी सो अतिसै अगम
सुगम रामते सोइ॥२७मात पिता निज वा
लकहि करहिं इट उपदेस॥सुनि मानै विधि
आप जेहि निज सिर सहै कलेस॥२८॥न
वसो भलो मनाइवो भलो होनकी आस॥
करत गगन के गेडुआ सोसठ तुलसी दास
॥२९॥विलिमि सुदेखत देवता करनी समत
देव॥मुयेमार अविचार रत स्वारथ साधक
एव॥३०॥विनहि वीज तरु एकभव साखा द
ल फल फूल॥को वरनै अतिसै अमित सब
विधि अकल अतूल॥३१॥सुकपि कमुनि
गन वुध विवुध फल आश्रित अति दीन॥
तुलसी ते सब विरदहित सोतरु तासु अधीन
॥३२॥कोनहिं सेवत आयभव कोनसेय प
छताय॥तुलसी वादहि पचतहैं अपाहि आ
पनसाय॥३३॥कहत विविधि फल विस
लतेहि वहत नएक प्रमान॥भरम प्रतिष्ठा
मानि मन तुलसी कथत भुलान॥३४॥मृ
ग जल घट भरि विविधि विधि सींचत न

भ तरु मूल॥तुलसी मन हर्षित रहत बिनहि लहे फल फूल॥३५॥सोपि कहहिं हम कहँ लह्यौं नभ तरु को फल फूल॥ते तुलसी तिन्ह ते विमल सुनि मानहिं मूढ़मूल॥३६ तेपि तिन्हैं जाँचहि विनै करि करि बार हजार॥तुलसी गाडरकी ढरन जाने जगत विचार॥३७॥ससिकर सर्ग रचना किये कतसोभा सरमात॥स्वर्ग सुमन अवसंत खलु चाहत अचरज बात॥३८॥तुलसी बोल नवूकरै देखत देखनजोय॥तिन्ह सठके उपदेस को करव सयाने कोय॥३९॥जो न सुनै तेहि काक हिय कहा सुनाइय ताहि॥तुलसी तेहि उपदेसही तासु सरिस मति जाहि॥४०॥कहत॰ सकल घट राममय तौ खोजत केहि काज॥तुलसी कह इह कुमति सुनि उर आवत अति लाज॥४१॥अलख कहहिं देखन चहहिं॰ ऐसे परम प्रवीन॥तुलसी जग उपदेसहीं बनि बुध अबुध मलीन॥४२॥हहरत हारत रहित विद रहत धरे अभिमान॥ते तुलसी गुरु आव नहिं कहि इतिहास पुरान॥४३॥निज नैनन दीसत नहीं गही आँधरे बाँहि॥कहत मोहबस तेहि अधम परम हमारे नाह॥४४॥गगन वाटिका सींचही भरि भरि सिंधु तरंग॥तुलसी मानहि मोद मन ऐसे अधम अभंग॥४५॥हषद करत र

ना बिहरि रंग रूप सम तूल॥ बिहग बदन विष्ठा करे ताते भयो न तूल॥४६॥ चाह तेहारो आपते मान न आन न आन॥ तुलसी करु पहिचान पति यातें अधिक न आन॥४७॥ आतम बोध बिचार इह तुलसी करु उपकार॥ कोउ कोउ राम प्रसाद तें पावत परम तुपार॥४८॥ जहाँ तोष तहँ राम है राम तोष नहिं भेद॥ तुलसी देखि गहत नहीं सहत बिविधि विधिबेद॥४९॥ गोधन गजधन बाजिधन और रतन धन खानि॥ जब आवै संतोषधन सब धन धूरि समानि॥५०॥ कुथि रति अटत बिमूढ़ लट घट उर घटत न ज्ञान॥ तुलसी रटत हटत नहीं आतिसैं गति अभिमान॥५१॥ भूभुवंग गत दाम भुव काम न बिबिधि विधान॥ तो तनवर्त्त मान जत तत तुलसी परमान॥५२॥ भोंवर सुक्ति विभव पटिक मन गत प्रगट लषात॥ मन भोंवर अपि सुक्ति ते बिलग बिजान बतात॥५३॥ राम बरन पहिचान बिनु मिटी न मनकी दौर॥ जन्मग वांये बादही रटन पराये पौर॥५४॥ सुनै बरन मानै बरन बरन बिलग नहिं ज्ञान॥ तुलसी सुगुरु प्रसाद बल पै बरन पहिचान॥५५॥ बिटप बेल गन बागके माला कार न जान॥ तुलसी ताबिधि बिदबिना करता राम भुलान॥५६॥ करत वही सो कर्म है कहँ

तुलसी परमान॥ करन हार करतार सो भोगो
कर्म निदान॥५७ तुलसी लट पढ़ते मटक अटक
आपिन नहिं ज्ञान॥ तातें गुरु उपदेस बिनु भर
मत फिरत भुलान॥५८ ज्यौं बरदा बनि जार के फि
रत घनेरे देस॥ खांड भरे भुस खात हैं बिन गुरु
के उपदेस॥५९॥ बुध्वा बेगन अनय पद आपिन
पदारथ लीन॥ तुलसी तेहि रासभ सरिस नि
ज मन गनहि प्रवीन॥६०॥ कहत बिबिधि देख
बिना गहन अनेक नएक॥ ने तुलसी सो नहा
सरिस बानी बदहिं अनेक॥६१॥ बिन पाये पर-
तीत अति करत जथारथ हेतु॥ तुलसी अबुध
अकास इव भरि भरि मूठी लेत॥६२॥ बसन बा
रि बाँधत बिहठि तुलसी कौन बिचार॥ हान
लाभ बिधि बाध बिन होत नहीं निरधार॥६३
॥ काम क्रोध मद लोभ की जब लगि मन में
खानि॥ कापंडित कामूरख दोनो एक समान॥
६४॥ रत कुल की करनी तजे जत न भजे भग
वान॥ तुलसी अध बर के भये ज्यौं बधूर को
पान॥६५॥ कीर सरिस बानी पढ़त चाखन चा
हत खाँड॥ मन न गरक्त बैराग महं घरमा रखत
रांड॥६६॥ राम चरन परचे नहीं बिन साधन
पद नेह॥ मूंड मुडाये बादहीं भाँड भये तजि
गेह॥६७॥ काह भयो बन बन फिरे जो बनि
आयो नाहिं॥ बनते बनते बनि गयो तुलसी
घरहीं माहिं॥६८॥ जो गति जानै बरन को

तन गनि सो अनुमान॥ बरन विंदु कारन जथा तथा जानु नहिँ आन॥६९॥ बरन जोग भव नाम जग जानु भरम को मूल॥ तुलसी करता है तुही जान मानु जनि भूल॥७०॥ नाम जगत सम समुझु जग वस्तु नकरि चित वैन॥ विन्दु गए जिमि गैनते रहत सैन को ऐन॥७१॥ आपुहि ऐन विचारु विधि सिद्धि विमल गति मान॥ आन बासना विंद सम तुलसी परम प्रमान॥७२॥ धन धन कहे नहोत कोउ समुझि देखु धनु मान॥ होत धनिक तुलसी कहत दुखित नरहत जहान॥७३॥ हिमकी मूरति के हिय लगी नीरकी प्यास॥ लगत सब्द गुरु तरनिकर सोमैं रही नआस॥७४॥ जाके उर बरबासना भई भास कछु आन॥ तुलसी ताहि विडंबना कहि विधि कथहि प्रमान॥७५॥ रुजन नभव परचै विना भेषज करि किमि कोय॥ जान परै भेषज करै सहज नास रुज होय॥७६॥ मानस व्याध कुचाह तव सदगुरु वैद समान॥ जासु वचन अल बल अवस होन सकल रुज हान॥७७॥ रुचि बाढ़े सतसंग महँ नीति छुधा अधिकाय॥ होत ज्ञान बलपीन अल वृजिन विपति मिटि जाय॥७८॥ शुक्ल पक्ष सोरा सलछमी कृष्ण पक्ष दुति हीन॥ बढत घटत विधि भांति विवि तुलसी कहहिं प्रवीन॥७९॥ सन संगति सित पक्ष सम असित

असंत प्रसंग॥ जानु आप कहँ चंद्र सम तुल
सी वदन अभंग॥८०॥ तीरथ पति सत संग
सम भक्ति देव सरि जान॥ विधि उलटी गति
रामकी तरनि सुता अनुमान॥८१॥ वर मेधा
मानहु गिरा धीर धर्म न्यग्रोध॥ मिलन त्रिवे
नी मन हरनि तुलसी तजहु विरोध॥८२॥ स
मकव सम मज्जन विसद मल अनीत गदं
धोय॥ अवस मिलन संसै नहीं सहज राम
पद होय॥८३॥ छेम विमल वारानसी सुर आ
गा सम भक्ति॥ ज्ञान विश्वेश्वर अति विसद
लसत दया सह सक्ति॥८४॥ वसत छेम ग्रह
जासु मन वारा लसी नहूरि॥ विल सति सुर
सरि भक्ति जहँ तुलसी नयकृत भूरि॥८६॥
सित कासी मगहर असित लोभ मोह मद
काम॥ हान लाभ तुलसी समुझि वास कर
हु वसु जाम॥८७॥ गये पलटि आवै नहीं
है सो करु पहिचान॥ आजु जेई सो कालहै
तुलसी भरम न मान॥८८॥ वर्तमान आधी
न दोउ भावी भूत विचार॥ तुलसी संसै म
न नकरु जोहै सोनिरु आर॥८९॥ मानस
उर वर सम मधुर राम सुजस सुचि नीर॥
उठेउ रजित बुधि विमल भद बुधि नहिं
अगाम अधीर॥९०॥ अलंकार कवि रीति जुत
भूषन दूषन रीति॥ वारि जात बरनन विवि
धि तुलसी विमल विनीति॥९१॥ विनै लि

चार सुहृदता सो परम रस गंध॥ कामादिक तेहि सरल सत तुलसी घाट प्रबंध॥९१॥ प्रेम उमंग कविता वली चली सरित सुचि धार॥ राम वराबरि मिलन हित तुलसी हरष अपार॥९२॥ तरल तरंग सुछंद वर हरत दैत तरुमूल॥ वैदिक लौकिक विधि विमल लसत विसद वरकूल॥९३॥ सत सभा विमला नगारि सिगारि सुमंगल खानि॥ तुलसी उर सुरसरसुता लसत सुथल अनुमान॥९४॥ मुक्त मुमुक्षु वर विषद श्रोता त्रिविधि प्रकार॥ ग्राम नगर पुर जुग सुतट तुलसी कहहिं विचार॥९५॥ वारानसी विराग नहिं सैल सुता मन होय॥ तिमि अवधहि तनुजुन तजै कहत सकवि सबकोय॥९६॥ कहब सुनब समुझब पुनः सुनि मुसुकायब आन॥ अमहर घाट प्रबंध वर तुलसी परम प्रमान॥९७॥ इति श्री मद्गोसाईं स्वामी तुलसी दास विरचितायां सप्तशतिकायां आत्म बोध निर्देशो नाम चतुर्थः सर्गः॥ ४॥ ॐ॥ जतन अनूपम जासु वर सकल कला गुन धाम॥ अविनासी अव यह अमल सौं यह तनु धरि राम॥१॥ सदा प्रकास सरूप वर अस्तन अपर न आन॥ अप्रमेय अद्वैत अज यातें इतर न ज्ञान॥२॥ जानहिं हंस रसम कह तुलसी संत न आन॥ जाके कृपा कटाक्षतें पावै पद निर्वान॥३॥ तजत सलिल अपि पुनि गहत घटत व

असंत प्रसंग॥ जानु आप कहँ चंद्र सम तुलसी वदन अभंग॥८०॥ तीरथ पति सत संग सम भक्ति देव सरि जान॥ विधि उलटी गति रामकी तरनि सुता अनुमान॥८१॥ वर मेधा मानहु गिरा धीर धर्म नग्रोध॥ मिलन त्रिवेनी मन हरनि तुलसी तजहु विरोध॥८२॥ समकव सम मज्जन विसद मल अनीत गहं धोय॥ अवस मिलन संसै नहीं सहज राम पद होय॥८३॥ छेम विमल वारानसी सुर अगा सम भक्ति॥ ज्ञान विश्वेश्वर अति विसद लसत दया सह सक्ति॥८४॥ बसत छेम ग्रह जासु मन वारा नसी नदूरि॥ विल सति सुरसरि भक्ति जहँ तुलसी नयकृत भूरि॥८६॥ सित कासी मगहर असित लोभ मोह मद काम॥ हान लाभ तुलसी समुझि वास करहु वसु जाम॥८७॥ गये पलटि आवै नहीं है सो करु पहिचान॥ आजु जेई सो कालहै तुलसी भरम नमान॥८८॥ वर्त्तमान आधी नदोउ भावी भूत विचार॥ तुलसी संसै मन करु जौहै सोनिकु आर॥८९॥ मानस उर वर सम मधुर राम सुजस सुचि नीर॥ उदेव रजित बुधि विमल भद सुधि नहिं अगाम अधीर॥९०॥ अलंकार कवि रीति जुत भूषन दूषन रीति॥ वारि जात वरनन विविधि तुलसी विमल विनीति॥९१॥ विनै नि

चार सुहृदता सो पराग रस गंध॥कामादिक तेहि सरल सत तुलसी घाट प्रबंध॥९१॥प्रेम उमग कविता वल्लीकली सरित सुचि धार॥राम वरबारि मिलन हित तुलसी हृदय अपार॥९२॥तरल तरंग सुछंद वर हलत हैत तरुमूल॥वैदिक लौकिक विधि विमल लसत विसद वरकूल॥९३॥सत सभा विमला नगरि सिंगारि सुमंगल खानि॥तुलसी उर सुरसरसुता लसत सुथल हनुमान॥९४॥मुक्त मुमुक्षु वर विषद श्रोता त्रिविधि प्रकार॥ग्राम नगर पुर जुग सुतट तुलसी कहहिं विचार॥९५॥वारानसी विराग नहिं सैल सुता मन होय॥तिमि अवधहि सरजु न तजै कहत सकवि सब कोय॥९६॥कहब सुनब समुझब पुनः सुनि मसुकायब आन॥अमहर घाट प्रबंध वर तुलसी परम प्रमान॥९७॥इति श्री मद्गोसाईं स्वामी तुलसी दास विरचितायां सप्तशतिकायां आत्म बोध निर्देशो नाम चतुर्थः सर्गः॥४॥५॥

जतन अनूपम जासु वर सकल कला गुन धाम॥ अविनीसी अब यह अमल भौ यह तनु धरि राम॥१॥सदा प्रकास सरूप वर अस्तन अपर नसान॥अप्रमेय अद्वैत अज यातें दुरत न ज्ञान॥२॥जानहिं हंस रसम कह तुलसी संत नसान॥जाके कृपा कटाक्षतें पावै पद निर्वान॥३॥तजत सलिल ओप पुनि गहत धरत व

दत नहि रीति॥ तुलसी यह गति उर निरखि करिय राम पद प्रीति॥ ४॥ चुम्बक दरहन सीति जिमि संतन हरि सुखधाम॥ जानति रीझ रसम सफरि तुलसी जानत राम॥ ५॥ भरत हरत दरसत सर्वहिं पुनि अदरस सव काहु॥ तुलसी सगुरु प्रसाद वर होत परम पद लाहु॥ ६॥ ९ जथा प्रत्यक्ष सरूप वहु जानत है सव कोय॥ तथा हिलै गतिको लखव असमंजस अति सोय॥ ७॥ जथा सकल आप जात आप रवि मंडल के माहिं॥ मिलत तथा जिव राम पद होत तहां लै नाहिं॥ ८॥ कर्म कोस संगलै गयौ तुलसी अपनी वानि॥ जहां जाय बिलसै तहां परै कहां पहिचान॥ ९॥ ज्यौं धरनी महं हेतु सव रहत जथा धरि देह॥ ज्यों तलसी लै राम महं मिलत कबहुं नहिं एह॥ १०॥ सोषक पोषक सगुरु सुचि राम प्रकास सरूप॥ जथा तथा विनु देखिये जिमि आदरस अनूप॥ ११॥ कर्म मिटाये मिटत नहिं तुलसी किए विचार॥ करतवही के फेरहै याविधि सार असार॥ १२॥ एक किधं होय दूसरो बहुरि तीसरो अंग॥ तुलसी कैसेहु लानसै अतिसै कर्म तरंग॥ १३॥ द्वन्द दोउन्हते रहतभो कोउ नराम तजि आन॥ तुलसी यह गति जानिहै कोउ कोउ संतसुजान॥ १४॥ संतन कोलै अमि सदन समुकहि सुगति प्रवीन॥ कर्म विपर्जै कबहुं न सदा रा

म रसलीन॥१५॥सदा एक रस संत सिय निसै निसकर जान॥राम दिवाकर दुखहरन तुलसी सील. निधान॥१६॥ संतनकी गति गुरुविजा जानहु ससि परमान॥रमित रहत रसमैं सदा तुलसी रति नहिं आन॥१७॥जात रूप जिमि अनल मिलि ललित होत तनताय॥सन्त सीलकर सीय तिमि लसहि राम पद पाय॥१८॥आपुहि बांधत आपु हठि कौन छुड़ावत ताहि॥सुखदायक देखत सुनत तदपि सोंमानत नाहिं॥१९॥जो न तारते अधम गति उर्ध तौं न गति जात॥तुलसी मकरी तंतु इव कर्म नकबहुं नसात॥२०॥जहां रहत तहं सह सदा तुलसी तरी वानि॥सुधरै विधि वस होय जब सत संगति पहि चानि॥२१॥रवि रजनी सघरा तथा देह अस्थिर अस्थूल॥सूक्षम गुन को जीवकर तुलसी सोतन मूल॥२२॥अद्यत अपराव ते जथा जात तथा रवि माहिं॥जहां तैंप्रगटत ही दुरत तुलसी जानत ताहि॥२३॥प्रगट भये देखत सकल दुरत लखत कोइ कोय॥तुलसी यह अतिसै अगाम विन गुरु सुगाम नहोय॥२४॥याजग जे नयहीन नर वर वस दुखमग जाहि॥प्रगटत दुरत महा दुखी कहं लगि कहियत नाहि॥२५॥सुखदुखमग अपने गहे सब केहु गहत नधाय॥तुलसी राम प्रसाद विनु सो किमि जानो जाय॥२६॥महिते रवि रविते अवनि स

पनेहु दुखकहुं नाहिं॥ तुलसी तब लगि दुखित अति ससि मगु लहत नताहि॥२७॥ संतन की गति सीत कर लेस कलेस नहोय॥ सोसिय पद सुखदा सदा जानु परम पद सोय॥२८॥ तजत अमिय ससि जानि जग तुलसी देखत रूप॥ गहत नहीं सबकाहु विदित अति सै अमल अनूप॥२९॥ ससि कर सुखद सकल जगत को तेहि जानत नाहिं॥ कोक कमल कर दुखद कर जदपि दुखद नहिं ताहि॥३०॥ इ विन देखे समुझे सुने सोउ भौ मिथ्या वाद॥ तुलसी गुरु गम कै लखै सहजहि मिटै बिषाद॥३१॥ वरषि विस्व हरषित करत हरत ताप अघ प्यास॥ तुलसी दोषन जलद कर ज्यों मद जर तज वास॥३२॥ चंद्र देत अमि लेत विष देखहु मनहिं विचार॥ तुलसी तिमि सिय संत वर महिमा विसद अपार॥३३॥ रसम विदित रवि रूप लघु सीत सीत कर जान॥ लसत जोग जस कार भव तुलसी समझ समान॥३४॥ लेति अवनि रवि अंस कहं देति अमिय अपसार॥ तुलसी सूक्षम को सदा रवि रजनीस अधार॥३५॥ भूमि भानु अस्थूल अप सकल चराचर रूप॥ तुलसी विन गुरु नालहै यह मत अमल अनूप॥३६॥ तुलसी जे लयलीन नर नैनिसि करत नलीन। अपर सकल रवि गत भये महा कष्ट अति

दीन॥३७ तुलसी कबनेहु जोगते सत संगत
जब होय॥राम मिलन संसै नहीं कहहिं सु
मति सब कोय॥३८॥सेवक पद सुखकर सद
दुखद सत्रु पद जान॥जया विभीषन रावन
हि तुलसी समुझ प्रमान॥३९॥सीत उष्ण क
र रूप जुग निसि दिन कर करतार॥तुलसीः
तिन कहँ एक नहिं निरखहु करि निरधार॥४०
॥नहि नैनन काहू लख्यौ धरत नाम सब को
य॥तातैं साचोहै समुझ झूठ कबहुँ नहिं हो
य॥४१॥वेद कहत सबकोउ विदित तुलसीः
अमिय स्वभाव॥करत पाम अपि रुज हरतः
अविरल अमल प्रभाव॥४२॥गंध सीत अपि
उष्णता सबहि विदित जग जान॥नहि बनअ
नल सो आनि लगत विन देखे परमान॥४३॥
इन महँ चेत न अमल अल विलषत तुलसीदा
स॥सोपद गुरु उपदेस सुनि सहज होत पर
कास॥४४॥येहि विधितें वर बोध दृढ गुरुप्रसा
द कोउ पाव॥हैतें अलातिहु काल महँ तुलसी
सहज प्रभाव॥४५॥काक सुता सुतवा सुना मि
लत जननि पित धाय॥आदि मध्य अवसान
गत चेत नसहज सुभाय॥४६॥समता स्वार-
थ हीनतें होत सुविसद विवेक॥तुलसी यह
तिन्ह ही फवै जिन्हहि अनेक नएक॥४७॥
सब स्वारथ स्वारथ रटत तुलसी घटत नए
क॥ज्ञान रहित अज्ञान रत कठिन कुमन क

रटेक॥४८॥ स्वारथ सो जानहु सदा जासो विपति नसाय॥ तुलसी गुरु उपदेस बिन सो किमि जानो जाय॥४९॥ कारज स्वारथ हित करै कारन करै नहोय॥ मन वा ऋष विसेषते तुलसी समुझहु सोय॥५०॥ कारन कारज जानता सब काहू परमान॥ तुलसी कारज कार जो सो तैं अपर न आन॥५१॥ बिन करता कारज नहीं जानत हैं सब कोय॥ गुरु मुख स्रवन सुनत नहीं प्राप्ति कवन विधि होय॥५२॥ करता कारन कारजहु तुलसी गुरु परमान॥ लोपत करता मोह बस ऐसो अबुध मलान॥५३॥ अनिल सलिल बिबि जोगते जथा बीचि बहु होय॥ करत करावत नहिं कछुक करता कारन सोय॥५४॥ छेम धरन करतार कर तुलसी पति परधाम॥ सेवक तरता समन कोउ सब विधि पूरन काम॥५५॥ करता कारन सार पद आवै अमल अभेद॥ कर्म घटत अपि बढ़त हैं तुलसी जानत वेद॥५६॥ स्वेदज जवन प्रकारतें आपु करै कोउ नाहिं॥ भये प्रगट तेहिके सुनौ को न बिलोकत ताहिं॥५७॥ भयो विसमता कर्म महँ समता किए नहोय॥ तुलसी समता समुझ कर सकल मान मद धोय॥५८॥ समहित सहित समस्त जग सुहृद जान सब काहु॥ तुलसी यह मत धारु उर दिन प्रति अति सुख लाहु॥५९॥ यह मन महँ निश्चै धरहु है

कोउ अपर न आन॥कासन करत विरोध हरि
तुलसी समुक प्रमान॥६०॥महि जल अनलरु
सो अनिल नभ तहाँ प्रगट तव रूप॥जानि जा
य वर बोधतैं अति सुभ अमल अनूप॥६१॥जो
पै आकस मातते उपजै बुद्धि विसाल॥तातौ अ
ति छल हीन ह्वै गुरुसेवन कछुकाल॥६२॥कार
न गुन जानहु हिये नित्य अनित्य समान॥गुरुग
मतैं देखहि सुजन कह तुलसी परमान॥६३॥म
हि मयंक ग्रहनायको आदि ज्ञान भौभेद॥ता
विधितेइ जीवकहँ होत समुक विन खेद॥६४॥
परो फेर निज कर्म महँ भ्रम भवका यहहेत॥
तुलसी कहत सुजन सुनहु चेतन समुक अचे
त॥६५॥नामकार दूषन नहीं तुलसी किये वि
चार॥कर्मन की घटना समकि ऐसेवरन उचा
र॥६६॥सुजन कुजन महिगत जथा तथा भा
न सरसि माहिं॥तुलसी जानतहो सुखी होत
समुक विन नाहिं॥६७॥मातु तात भव रीति
जिमि तिमि तुलसी गति सोरि॥मातन ताल-
न जातु नव हैतेहि समुक बहोरि॥६८॥सर्व सक
लतै है सदा विशेषित सवठौर॥तुलसी जानहि
सुहृदजे तेअति मति सिर मौर॥६९॥अलंकार
घटना कनक रूप नाम गुन तीन॥तुलसी राम
प्रसादतें परि षहि परम प्रवीन॥७०॥एक पदा
रथ विविधि गुन संज्ञा अगम अपार॥तुलसी
सुगुरु प्रसादतें पायेपद निरधार॥७१॥गांध न

मूल उपाधि बहु भूषन तन गन जान॥सोभा गुन तुलसी कहहिं समुझहिं सुमति निधान॥७२॥जैसे जहां उपाधि तहं घटित पदारथ रूप॥तैसे तहाँ प्रभास मन गुन गन सुमति अनूप॥७३॥जानु वस्तु अस्थिर सदा मिटत मिटाये नाहिं॥रूप नाम प्रगटत दुरत समुझि विलोकहु ताहि॥७४॥पेष रूप संज्ञा कहब गुन सुविवेक विचार॥इतनोई उपदेसवर तुलसी किये विचार॥७५॥सदा सगुन सीता रमन सुखसागर बल धाम॥जन तुलसी परषे परम पाये पद विश्राम॥७६॥सगुन पदारथ एक नित निर्गुन अमित उपाधि॥तुलसी कहहिं विसेषतें समुझ सुगति सुठि साधि॥७७॥जथा एक मह वेद गुन नामहुं को कहु नाहि॥तुलसी बरनत सकल हैं समुझत कोउ कोउ नाहि॥७८॥तुलसी जानत साधु जन उदै अस्त गत भेद॥बिन जाने कैसे मिटै विविधि जनन जनखेद॥७९॥संसै सो कस मूलरुज देत अमित दुख ताहि॥अहि अनुगत सपने विविधि चाहि परायन जाहि॥८०तुलसी साचो सापहे जबलगि खुलैन नैन॥सो तबलगि जबलगि नहीं सुनै सुगुरु बरबैन॥८१॥पूरन परमारथ दरस परसत जौलगि आस॥तौलगि घन उत्पन नद जबलगि जलन प्रयास॥८२॥तबलगि हमतें सब बड़ो जबलगि है कछु चाह॥चाह रहित कहु को अधिक पाय परम पद थाह॥८३

कारन करता हैअचल अपि अनाद अजरूप॥ता
ते कारज बिपुलतर तुलसी अनल अनूप॥८४॥क
र्ता जानि नपरतहै बिनगुरु कर परसाद॥तुलसी
निज सुखविधि रहित केहि विधि मिटै विषाद८५
॥म्रिन मय घट जानत जगत बिन कुलाल
नहिं होय॥तिमि तुलसी करतार हित कर्म करैः
कहुँ कोय॥८६॥ताते करता ज्ञान कर जाते कर्मः
प्रधान॥तुलसी नालषि पाइहौ किए अमित अ
नुमान॥८७॥अनूमान साखी रहित होत नहीं पर
मान॥कह तुलसी परतक्ष जो सोकहु अपर कोअ
न॥८८॥भिति कारन करता सहित कारज किए अ
नेक॥जौं करता जाने नहीं तौ कहु कवन विवेक
॥८९॥स्वर्न कार करता कनक कारन प्रगट लषा
य॥अलंकार कारज सुखद गुन सोभा सरसाय
॥९०॥चामी कर भूषन अमित करता कह तव÷
भेद॥तुलसी जेगुरु गम रहित ताहि रमित अति
खेद॥९१॥तननि मित्त जहै जोभयो तहाँ सोई इ
परमान॥जिन जाने माने तहाँ तुलसी कहहिं
सुजान॥९२॥म्रन मय भाजन विविध विधि
करता मन भव रूप॥तुलसी जानेते सुखद गुरु
गम ज्ञान अनूप॥९३॥सब देखत म्रन भाज न
हिं कोइ कोइ लखत कुलाल॥जाके मनके रूप
वह भाजन विलखु बिसाल॥९४॥एकै रूप कुला
लको माटी एक अनूप॥भाजन अमित बिसा÷
ल लघु सोकरता मन रूप॥९५॥जहाँ रहत बरत

त तहाँ तुलसी नित्य स्वरूप॥भूतन भावी नाहि
कहँ अतिसै अमल अनूप॥९६॥स्वास समीर प्र
त्यक्ष अप स्वच्छ दरस लषात॥तुलसी राम प्रसाद
विन अवि गति जानि नजात॥९७॥तुलसी तुल
रहिजात है जुग तन अचल उपाधि॥यह गति ते
हि लखि परत जेहि भई सुमति सुठि साधि॥९८
॥करता कारन कालके जोग करम मत जान॥
पुनः काल करता हरत कारन रहत प्रमान॥९९॥
इति श्री मद्गो साँई स्वामी तुलसी दास विरचि
तायां सप्त शति कायां कर्म सिद्धांतयो गोनाम पंच
मः सर्गः॥५॥ ॥ ६ ॥ जल थल तन गत है सदा ते
तुलसी तिहु काल॥जन्म मरन समुझ विना भा
सत समल विसाल॥१॥तै तुलसी करता सदा का
रन शब्द नशान॥कारन संज्ञा सुख दुखद विन गुरु
तेहि किमि जान॥२॥कारज रत करता समुझ दुख
सुख भोगत सोय॥तुलसी श्री गुरु देव विन दुख
प्रद दूर नहोय॥३॥कारन सब्द सरूपमें संज्ञा गुन
भव जान॥करता सुर गुरतें सुखद तुलसी अपर
नशान॥४॥गंध विभावरि नीर रस सलिल अनल
गत ज्ञान॥वायु वेग कहँ विन लखे बुध जन
कहहिं प्रमान॥५॥अनुस्वार अक्षर रहित जानत
हैं सब कोय॥कहँ तुलसी जहँ लगि वरन तासु
रहित नहिं होय॥६॥आदिहु अंतहु है सोइ तुल
सी और नशान॥विनदेखे समुझे विना किमि को
इ करै प्रमान॥७॥रहित विंदु सब वरनतें रेफ स

हित सब जान॥तुलसी स्वर संजोगते होत बरन
पद मान॥८॥अनुस्वार सूक्षम जया तथा बरन
अस्थूल॥जो सूक्षम अस्थूल सो तुलसी कबहूं
नभूल॥९॥अनिल अनल पुनि सलिल रज तन
गत तनवत होय॥बहुरि सोरज गतजल अनल
मरुत सहित रवि सोय॥१०॥और भेद सिद्धांत:
यह निरखु सुमति कर सोय॥तुलसी सुत भव
जोग बिन पितु संज्ञा नहिं होय॥११॥संज्ञा कह
तब गुन समरु सुनब अह परमान॥देखब स
बिसेख हे तुलसी बेख बखान॥१२॥होत पितासे
पुत्र जिमि जानत कोकहु नाहिं॥जब लगि सु
त परसो नहीं पितु पद लहै नताहि॥१३॥तिमि
बरनन कर संज्ञा बरन बरन संजोग॥तुलसी
होय नबरन कर जब लगि बरन बियोग॥१४
॥तुलसी देखहु सफल कहै यहि बिधि सुत :
आधीन॥पितु पद परखि सो हढ़ भयो कोउ को
उ परम प्रवीन॥१५॥जहं देखो सुत पद सक:
ल भयो पिता पद लोप॥तुलसी सोजाने सोइ
जासु अमोलिक चोप॥१६॥ख्यात सुवन तिहु:
लोक महं महा प्रबल अति सोइ॥जौं कोइ ते
हि पाछे करै सोपर आगे होइ॥१७॥तुलसी=
होत नहीं कछु कर हित सुवन बेवहार॥ताही
ते अग्रज भयो सब बिधि तेहि पर वार॥१८॥
सुवन देखि भूले सकल भय अति परम अधी
न॥तुलसी जोहि समुझाइये सोमन करत मली

न॥१९॥ मानत सो साचो हिये सुनत सुनावत =
वादि॥ तुलसीतें समुझत नहीं जोपद अमल अ
नादि॥२०॥ जाहि कहतहैं सकल सो जेहि कहत
व सो ऐन॥ तुलसी ताहि समुझि हिये अजहु क
रहु चित चैन॥२१॥ तुलसी जोहै सो नहीं कहत
आन सब कोय॥ यहि विधि परम विडम्बना =
काहहु नका कह होय॥२२॥ गुरु कीचो सिद्धान्त
यह होय जथारथ बोध॥ अनुचित उचित लषाय
उर तुलसी मिटै विरोध॥२३॥ सत संगत को
फल यही संसै लहै नलेस॥ है अस्थिर सुचि =
सरल चित पावै पुनि नकलेस॥२४॥ जौ मर
वो पद सबनको यह लगि साध असाध। कव
न हेतु उपदेस गुरु सत संगत भव बाध॥२५॥
जौ भावी कछु है नहीं झूठो गुरु सत संग॥ ऐसि
कुमतिते झूठ गुरु संतनको परसंग॥२६॥ जौ
लै लखि नाहीं परत तुलसी पर पद आप॥ तौ
लगि सोहि विवस सकल कहत पुत्रको बाप
॥२७॥ जहँ लगि संज्ञा बरन भौं जासु कहते हो
य॥ तौ तुलसी सोहै सबल आन कहा कछु होय
॥२८॥ अपने नैनन देखिजे चलहिं सुमति
बर लोग॥ तिनहिं नविपति विषाद रुज तुलसी
सुमति सुजोग॥२९॥ स्वगा रागन्न चर ज्ञान वि
न करत नहीं पहिचान॥ परबस सठ हठ तमन
सुख तुलसी फिरत भुलान॥३०॥ काहु कहो नं
हि सोहैक जेहि उपदेसव चाल॥ तुलसी कह

त सो दुख सहत समुझ रहित हित बात ॥३१॥ बिन काटे तरुवर जथा मिटै कवन बिधि छाहै ॥ त्यौं तुलसी उपदेस बिन निह संसै कोउ नाहै ॥३२॥ अपनो करतब आप लखि सुनि गुनि आप बिचार। तौ तोहि कह दुखदा कहा सुखदा सुमति अधार ॥३३॥ ब्राह्मन बर बिद्या बिनै सुरति बिवेक निधान॥ पथरति अनघ अतीत मति सहित दया स्रुतिमान॥३४॥ बिनै छत्र सिर जासुके प्रीति पद परउपकार। तुलसी सो छत्री सही रहित सकल बिभिचार॥३५॥ वैस बिनै मग पग धरै हरै कटुक बर बैन॥ सदय सदा सुचि सरलता हीय अचल सुख ऐन॥३६॥ सूद्र दुःपथ परिहरै हृदय बिप्र पद मान॥ तुलसी मन समता सुमति सकल जीव सम जान॥३७॥ हेतु धरन बर मौन रहनि रसनि रास सुख सार ∗चाहन काम सुबालरम तुलसी सु दृढ बिचार॥३८॥ जथा लाभ संतोष रत गरहमगवन सगरीत॥ सेतुलसी सुखमें सदा जिन्ह तनु त्रिभव बिनीत॥३९॥ रहै जहाँ बिचरै तहाँ कमी कहूँ ककु नाहिं॥ तुलसी तहँ आनंद संग जात जथा संग छाहिं॥४०॥ करत कर्म जहिका सदा सो मन दुख दातार॥ तुलसी जौं समुझै मनहिं∗ सो तेहि तजै बिचार॥४१॥ कहत सुनत सम कृत लखत तेहि तें बिपति नजाय॥ तुलसी मबते बिलग हैं जबते नाहि ठहराय॥४२॥ सुनत

कोटि कोटिन कहत कौड़ी हाथ नएक॥ देख
त सकल पुरान श्रुति तापर रहित विवेक॥४३
समुझत है संतोष धन यातें अधिक नज्ञान॥
गहत नहीं तुलसी कहत तातें अबुध मलान॥
४४॥ कहा होत देखे कहे सुनि समुझे सब री
ति॥ तुलसी जब लगि होत नहिं सुखद राम
पद प्रीति॥४५॥ कोटिन साधन के किये अंतर
मल नहिं जाय॥ तुलसी जौलगि सकल गुन स
हित नकर्म नसाय॥४६॥ चाहचली जबलगि स
कल तब लगि साधन सार॥ तामहं अमित कले
स कर तुलसी देख विचार॥४७॥ चाह किये दुखि
या सकल ब्रह्मादिक सब कोय॥ निश्चलता तुल
सी कठिन राम कृपा बस होय॥४८॥ अपनो क
मै नआप कहं भलो मंद जेहि काल॥ तब जान
ब तुलसी भई अति सै बुद्धि बिसाल॥४९॥ तुल
सी जबलगि लखि परत देह प्रान को भेद॥ तबलगि
कैसेकै मिटै करम जनित बहु खेद॥५०॥ जोदे दे
ह सोच प्रानहै प्रान देह नहिं दोय॥ तुलसी जो ल
खि पायहै सोनिरदय नहिं होय॥५१॥ तुलसीतें झू
ठो भयो करि झूठे संग प्रीति॥ है सांचो होय सांच
जब गहै रामकी रीति॥५२॥ झूठी रचना सांचहै र
चत नहीं अलसात॥ बरजत हू करावत बिहसि नेक
न बूझत बात॥५३॥ कर मसखरी कर मोह थल अं
क चराचर जाल॥ हरत भरत भर हर गनत जग
त जोतखी काल॥५४॥ कहन काल किल सकल

बुधताकर यह वेवहार॥उतपति थितिलै होतहै
सकल तासु अनुहार॥५५॥अंकुर किसलै दल=
बिपुल साखा जुत वर मूल॥फूलि फरत रितु अ
तुहरत तुलसी सकल सदल॥५६॥कहु तब क
रतब सकल तेहि ताहि रहत नहिं आन॥जान
नमानन आन विधि अनूमान अभिमान॥५७
हान लाभ जय विधि विजय ज्ञान दान सनमान
खान पान सुचि रुचि असुचि तुलसी विदित वि
धान॥५८॥सालक पालक सम विसम रस भम
गम गति ज्ञान॥अट घट लट नट नादि जट तुल
सी रहित नजान॥५९॥कठिन करम करनी क
थन करता कारक काम॥काय कष्ट कारन कर
म होत काल समसाम॥६०॥खवर आतमा बो
ध वर खर विन कबहु नहोय॥तुलसी खसम:
विहीनजे तेखर तर नहिं सोय॥६१॥चितरति वि
त वेवहरित विधि अगम सुगम जय मीच॥धी
र धरम धारन हरन तुलसी परत नवीच॥६२॥
शब्द रूप विवरन विसद तासु जोग भव नास॥
करता रूप बहु जाति तेहि संज्ञा सब गुन धाम॥
६३॥नाम जाति गुन देखि कै भयो प्रबल उर भ
र्म॥तुलसी गुरु उपदेस विन जानि सकै को म
र्म॥६४॥अपनो कर्म वर मानिकै आप बंधो सब
कोय॥कारज रत करता भयो आपन समुझत अ
सोय॥६५॥को करता कारन लखै कारज अगम
प्रभाव॥जो जहँ सो तहँ तर हरष तुलसी सहज

सुभाव॥६६॥तुलसी बिन गुरु को लखै वर्त्तमान बिबि
रीति॥कहु केहि कारनते भयो सूर उषा ससि सीत॥६७
करता कारन कर्मते पर पर आतम ज्ञान॥होत नबि
न उपदेस गुरु जो घट वेद पुरान॥६८॥प्रथम ज्ञान स
मुझै नहीं बिधि निषेद बेवहार॥उचितानुचित हिहरि
धरि करनव करय संभार॥६९॥जब मन महं ठहराय
बिधि श्रीगुरु वर परसाद॥इहि बिधि परमातम लखै
तुलसी मिटै विषाद॥७०॥वरवस करत विरोध हठि
होत चहत अक हीन॥ग्राहि गति वक हूक ध्यान
इव तुलसी परम प्रवीन॥७१॥आक कर्म भेषज वि
दित लखत नहीं मति हीन॥तुलसी सठ अकवस
विहरि किन छिन दीन मलीन॥७२॥करता होत कर्म
बस भोगत देष सब्ब॥करत भोग करनव जथा हो
य रंक किन भूप॥७३॥वेद पुरान शास्त्र सुन निज बु
धि बल अनुमान॥निज निज करि करिहै वहुरि क
हु तुलसी परमान॥७४॥विविध प्रकार कथन करै
जाहि जथा भव मान॥तुलसी सुगुरु प्रसाद बल को
न कोउ कहत प्रमान॥७५॥उर हर अति लघु होन
की भव लघु सुरति भुलान॥स्वर्न लाह लखि परत
नहि लखत लोहकी हानि॥७६॥नैन दोष निज क
हत नहि विविध वनावत वान॥सहत जानि तुल
सी विपति तदपि नेक लजान॥७७॥करत चातुरी
मोह बस लखत न निज हित हान॥सुक मरकट
इव गहत हठ तुलसी परम सुजान॥७८॥इन्द्रिया
सकल प्रकार सब समुझि परत है नाहिं॥लखत

नकंटक मीन जिमि अस नभचल भ्रम नाहिं॥७९॥
तुलसी निज मन कामना चहत सुन्य कहँ सेयाव
नन गाय मवंक विवाधि कहहु पयस कहि दुध॥८०
वातहि वातहि वनि परै वातहि वात नसाय॥वातहि
आदिहि दीप भव वातहि अंत बताय॥८१॥वातहिते
वनि आवई वातहिते वनिजात॥वातहिते वर वर मिल
त वातहितैं बौरात॥८२॥वात विना अतिसैं विकल वा
तहिसैं हरुयात॥वनत वात वरवातते कहत वात वर घा
त॥८३॥तुलसी जाने वात विन विगरत हरइक वात
॥अनजाने इव वातके जानिपरत कुसलात॥८४॥प्रे
म वयर औ पुन्य अघ जस अपजस जै हान॥वात वी
ज इन सवनको तुलसी कहहिं सुजान॥८५॥सदा
भजन गुरु साधु द्विज जीव दया सम जान॥सुखद
सुनै रत सत्य व्रत स्वर्ग सप्त सोपान॥८६॥वंचक विधि
रतनर तनै विधि हिंसा अति लीन॥तुलसी जग महँ
विदित वर नरक निसेनी तीन॥८७॥जे नर जग गु
न होय तुन तुलसी वदत विचार॥कवहु सुखी कव
हुँ दुखित उदै अस्त वेवहार॥८८॥कारज जगके जु
गल तम काल अनल वलवान॥विविधि विकलते
त हटहिं तुलसी कहहिं प्रमान॥८९॥अनुभव अम
ल अनूप गुरु कछुक अलख गति होय॥चवै काल
कर्म देपंत कहहिं सुवध सवकोय॥९०॥सव विधि
पूरन धाम वर राम अपर नहिं आन॥नाकी कृपा
कटाक्षते होत हिये दृढ ज्ञान॥९१॥सो स्वामी सो
तर सखा सोवर सुखदातार॥तात मात आवद हरं

न सो आस मै अधार॥९२॥ सुखद दुखद कारज कठिन जानत को तेहि नाहिं॥ जानेहु पर बिन गुरु कृपा करतब बनत नकाहि॥९३॥ तुलसी सकल प्रधान है वेद विदित सुख धाम॥ तामहं समुझब कठिन अति जुगल भेद गुन नाम॥९४॥ नाम कहत सुख होत है नाम कहत दुख जात॥ नाम कहत सुख जात दुरि नाम कहत दुख खात॥९५॥ नाम कहत बैकुंठ सुख नाम कहत अघ खान॥ तुलसी तो ते उर समुझि करहु नाम पहिचान॥९६॥ चारों चौदह अष्ट दस रस समुझब भरिपूर॥ नाम भेद समुझे बिना सकल समुझ महं धूर॥९७॥ बार दिवस निसि मास सित असित बर्ष परमान॥ उत्तर दक्षिन आस रवि भेद सकल महं जान॥९८॥ कर्म सुभा सुभ मिश्र और रोदन हसन बखान॥ और भेद अति अमित हैं कहं लगि कहिय प्रमान॥९९॥ जहं लगि जन देखब सुनब समुझब कहब सुरीत॥ भेद रहित कछुहै नहीं तुलसी बदहिं बिनीत॥१००॥ भेद याहि बिधि नाम महं बिन गुरु जान नकोय॥ तुलसी कहहिं बिनीत बर जौं बिरंचि सिव होय॥१०१॥ इति श्री मद्गोसाईं स्वामी तुलसी दास बिरचितायां सप्तशतिकायां ज्ञान सिद्धांतयो गोनाम षष्ठमः सर्गः॥६॥ • ॥ ❖ ॥ ॐ ॥ तिनहिं पढै तिन्हही सुनै तिनहि सुमति परगास॥ जिन आसा पाछे करे गहे अलख निसास॥१॥ तबलगि जोगी जगत गुरु जब लगि रहै निरास॥ जब आसा मनमें जगी जग गु

रु जोगी दास॥२॥ हित पुनीत स्वारथ सवहि अहित असुचि विन चाउ॥ निज मुख मानिक समद मन भूमि परत भौ हाउ॥३॥ निज गुन घट तन नागनग हर्षि नपहिरत कोल॥ गुंजा प्रभु भूषन करे तातें वढे नमोल॥४॥ रद सुमन करि वास तिल परिहरि खरि रस लेन॥ स्वारथ हित भूतल भरे मनमैं चकत नसेत॥५॥ असुचन पथिक निरासतें तटभुव सजल सरूप॥ तुलसी किन वंचे नहीं इन मव थलके कूप॥६॥ तुलसी मित्र महा सुखद सवहि मित्रकी चाव॥ निकट भये विलसत सुखप एक कृपाकर छाउ॥७॥ मित्र कोप वरतर सुखद अनहित मृदुल कराल॥ दुमदल सिसि रस खात सब सहति दाघ अति लाल॥८॥ खल नेर गुन मानै नहीं मेटहि दाता वोप॥ जिसि जल तुलसी देत रवि जलद करत तेहि लोप॥९॥ वरषत हरषत लोग सब करषत लखत नकोय॥ तुलसी भूपति भानु सम प्रजा भाग वस होय॥१०॥ मोली भानु कृसानु सम नीति निपुन महिपाल॥ प्रजा भाग वस होहिं गे कवहिं कवहि कलिकाल॥११॥ समै परे सुपुरुष नरन लघुकरि गनिय नकोय॥ नाघक पीपर वीज सम वचै तो तरु वर होय॥१२॥ वंड़ राम रत जगत मैं कै परहित चित जाहि॥ प्रेम पैज निवही जिन्हे वडो सो सवही चाहि॥१३॥ तुलसी संतन ते सुनै संतत इहै विचार॥ तन धन चंचल अवलन्या जुग जुग पर उपकार॥१४॥ ऊँचहि आपद विभव वर नीचहि दन्त नहोय॥ हान वढ द्विज राज क

है नहिं तारा गन कोय॥२५॥ बड़े रतहिं लघुके गुन
हिं तुलसी लघुहि नहेत॥ गुंजाते मुक्ता अकल गुंजा
होन नसेत॥२६ होहिं बडे लघु ससै सह तौ लघु
सकहिं नकाढ़ि॥ चन्द्र दूवरो कूवरो तऊ नषतते बा
ढ़ि॥२७॥ उरग तुरग नारी नृपति नर नीचो हथिया
र॥ तुलसी परखत रहब निन इनहीं पलटत बार॥
२८॥ दुरजन आप समान करि कौ रखैहित लागि
॥ तपत तोय सहजाहि पुनि पलटि घतावत आगि
२९॥ मंत्र तंत्र तंत्री त्रिया पुरुष अश्व धनपाठ॥ पूलि
गुन जोग वियोगते तुरित जाहिं एआठ॥३०॥ नीचः
निचाई नहिं तजै जौं पावहि सत संग तुलसी
चंदन विटप वसि विन विष भयेन भुवंग॥३१॥ दुर
जन दरपन सम सदा करि देखो हिय गौर॥ सनमुख
की गति औरहै विमुख भये कछु और॥३२॥ मित्रके
औगुन मित्रको परपह भाषत नांहि॥ कूप छांह जिमि
आपनी राखत आपहि मांहि॥३३॥ तुलसी सो सम
रथ सुमति सुकृती साधु सुजान॥ जो विचारि ववह
रत जग खरच लाभ अनुमान॥३४॥ सीख सखा
सेवक सचिव सुतिय सिखावन सांच॥ सुनि करिये
पुनि परि हरिय परम नरंजन पांच॥३५॥ मुषिहि नि
ज रुचि काज करि रुषहिं काज विगारि॥ तिया तनैः
सेवक सखामनके कंटक चारि॥३६॥ नारि नगर भो
जन सचिव सेवक सखा अगार॥ सरस परि हरे रंग र
स निरस विखाद विकार॥३७॥ दीरघ रोगी दारदी क
टुवच लोलुप लोग॥ तुलसी प्रान समान जौं तुरित

त्यागिवे जोग॥२८॥धाय लगे लोहा ललकि खैंचिउ
लेइय नीच॥समरथ पापी सोवयर तीन वेसाही मीच
२९॥तुलसी स्वारथ सामुहे परमारथ तन पीठि॥अंधक
है दुख पावकहि डिठियारे हिय डीठि॥३०॥अन समझै
नै सोच वर अवसि समुझिये आप॥तुलसी आपनः
समुझि विन पल पल पर परिताप॥३१॥कूप खनहिं
मंदिर जरत लावहिं धारिव वूर॥वोये लुन चह समय
विन कुमति सिरोमनि कूर॥३२॥निडर अनैकरि अन
कुसल वीस वाह्र सम होय॥गयो गयो कह सुमति
जन भयो कुमति कह कोय॥३३॥वहु सुत वहु रुचि
वहु वचन वहु अचार वेवहार॥इनको भलो मना
इवो इह अज्ञान अपार॥३४॥अपजस जोगकी जा
नकी मनि चोरीकी कान्ह॥तुलसी लोग रिझाइवो
करसि कातिवो नान्ह॥३५॥माँगि मधुकरी खात
जे सोवत पांव पसार॥पाप प्रतिष्ठा वढ़ि परी तुलसी
वाढ़ी रारि॥३६॥लही आँखि कव आंधरहिं वाँझ
पूत कव जाय॥कव कोढ़ी काया लही जग वहरा-
इच जाय॥३७॥या जगकी विपरीत गति काहि कै
हो समुझाइ॥जल जलि गौकरव वाधि गौ जनुः
तुलसी मुसुकाइ॥३८॥कै जूझिवो कि वूझिवो दा
नकि काय कलेस॥चारि चारु परलोक पथ जथा
जोग उपदेस॥३९॥वुध कि मानसर वेद वन मते
खेत सव सींच॥तुलसी कृषि गति जानिवो उत्त
म मध्यम नीच॥४०॥सहि कुवोल सासति सुसम
पाय अनट अपमान॥तुलसी धर्म नपरि हरहिं ते

वर संत सुजान॥४१॥अनहित ज्यों परहित किये आ
वन हित तम जान॥तुलसी चारु विचार मति करिय
काज सम मान॥४२॥मिथ्या माहुर सजन कहँ खल
हिं गरल सम साँच॥तुलसी परसि पषान जिमि पारद
पावक आँच॥४३॥तुलसी खल बानी बिमल सुनि ः
समुझब हिय हेरि॥राम राज बाधक भई मंद मंथ
रा चेरि॥४४॥दान दयादिक जुद्धके बीर धीर नहिं ः
आन॥तुलसी कहहिं विनीत इति तेनर वर परि मान
४५॥तुलसी साथी विपतिके विद्या विनय विवेक॥सा
हस सुकृत सत्य व्रत राम भरोसो एक॥तुलसी अस
सैके सरल साहस धर्म विचार॥सुकृत सील स्वभाव
रिज राम सरन आधार॥४७॥विद्या विनै विवेक रति
रीत जासु उर होय॥राम परायन सो सदा आपद ना
हि नकोय॥४८॥विन प्रपंच खलु भीख भलि नहिं ः
फल किये कलेस॥बावन बलि सोलीन्हि छलि दीन्ह
सबहि उपदेस॥४९॥विबुध काज बावन बलिहि छलो
भलो जिय जानि॥प्रभुता तजि बसभे तदपि मनते ः
गइ नगलानि॥५०॥बढे बढते छल करैं जनम कनौ
डे होहिं॥तुलसी श्रीपति सिर लसैं बलि बावन गति
सोहि॥५१॥खल उपकार विकारफल तुलसी जान ज
हान॥सेखट मरकट बनिक बक कथा सत्य उपखान
५२॥जौं मूरख उपदेसके होते जोग जहान॥दुरजो—
धन कह बोध किन आये स्याम सुजान॥५३॥हित
पर बढत विरोध जब अनहित पर अपमान॥राम वि
मुख विधि बाम गति सगुन अघाय अमान॥५४

साह सही सिखकोप बस किये कठिन परिपाक॥सठ
संकट भाजन भये हठि कुजती कपि काक॥५५॥मारि
सौंह करि खोजलें करि मत सब बिन त्रास॥सुये+
+ नीच बिन मीचते जदनके बिस्वास॥५६॥रीक आ
पनी बूकपर खीक बिचार बिहीन॥तेउपदेस नमानहीं
मोह महो दधि मीन॥५७॥समुकि सुनीत कुनीत+
रत जागतही रहसोय॥उपदेसिबो जगाइबो तुलसी
उचित नहोय॥५८॥परमारथ पथ मत समुकि लसत
बिषै लपटान॥बतरि चिताते अध जरी मानहु सती
पतान॥५९॥नजत अमिय उपदेस गुरु भजत बिषै
बिष खान॥चंद्र किरिन धोखे पयस चाटत जिमि
सठ स्वान॥६०॥सुर सदन तीरथ पुरिन निपट कु
चालि कुसाज॥मनहु मवासे मारि कलि राजत स
हित समाज॥६१॥चोर चतुर बटमार भटप्रभुप्रिय भडु
आभंड॥सब भक्षी परमारथी कलि सुपथ पाखंड॥६२
गोल गँवार नृपाल कलि जमन महा महिपाल॥सा
मन दामन भेद कलि केवल दंड कराल॥६३॥काल
तोपची तुपक महि दारू अनै कराल॥पाप पलीता
कठिन गुरु गोला पुहुमी पाल॥६४॥राग रोष गुन
दोष को साखी हृदय सरोज॥तुलसी बिकसत मित्र
लखि सकुचत देखि मनोज॥६५॥बयर सनेह सया
न पहि तुलसी जोनहि जान॥तेकि प्रेम पग मग॰
धरत पसु बिन पूछ बखान॥६६॥राम दास यह ॰
जायके जोनर कथहि सयान॥तुलसी अपने खांड
महं खाक मिलावत स्वान॥६७॥त्रिविधि एक विधि

प्रभु अगुन प्रजहिं सँवारहिं राउ॥करते होत कृपानको
कठिन घोर घन घाउ॥६८॥काल विलोकत ईस रुख
भानु काल अनुहार॥रविहि राहु राजहिं प्रजा बुधु ब
वहरहि विचार॥६९॥जथा अमल पावन पवन पाप
सुसंग कुसंग॥कहिय सुवास कुवास तिमि काल ः
महीस प्रसंग॥७०॥भलउ चलत पथ सोच भय नृप
नियोग नय नेम॥कुतिय सुभूखन भूखियत लोह सँ
वारित हेम॥७१॥सुधा कुनाज सुनाज फल आम अस
न सम जान॥सुप्रभु प्रजा हित लेहि कर सामादिक
अनुमान॥७२॥पाके पकए विटप दल उत्तम मध्यम
नीच॥फल नर लहहिं नरेस तिमि करि विचार मन
वीच॥७३॥धरनि धेनु चरि धरम तन प्रजा सुवत्स
पन्हाय॥हाथ कछू नहिं लागिहै किये गोष्टकी गाय
७४॥टंक टंक ह्वै परत गिरि साखा सहस खजूर॥
गरहि कुनृप करि करि कुनै सोकुचाल भुवि भूरि॥७५
भूमि रुचिर रावन सभा अंगद पदमहिपाल॥धर्म ः
राम नैसीम वल अचल होत तिहुं काल॥७६॥प्रीत
राम पद नीत रत धर्म प्रतीत स्वभाव॥प्रभुहि नप्रभुः
ता परिहरैं कवहुं वचन मनकाय॥७७॥करके करम
नके मनहिं वचन वचन जिय जानि॥भूपति भलहि
नपरि हरहिं विजै विभूति सयान॥७८॥गोली वान
सुमत्त सुर मसुटि उलटि गति देखु।उत्तम मध्यम
नीच प्रभु वचन विचारु विसेष॥७९॥सत्रु सयाने सः
लिल दव राख सीस अपुनाव॥वूड़त लखि डगमगत
सति चपरि चहूं दिस धाव॥८०॥रैयत राज समाज

घर तन धन धर्म सुबाहु॥सत्य सुसचिवहि सौंपि सु
ख बिलसहिं निज नर नाहु॥८१॥रसना मंत्री दसन ः
जन तोष पोष सब काज॥प्रभु कैसे नृप दान रक ः
बालक राज समाज॥८२॥लकरी डौवा करछुली सरस
काज अनुहारि॥सुप्रभु जो गहहिं नपरि हरहिं सेवक
सखा बिचारि॥८३॥प्रभु समीप छोटे बड़े अचल हो
हिं बलवान॥तुलसी बिदित बिलोकहीं कर अंगुली ः
अनुमान॥८४॥तुलसी भल बरनत बढ़त निज मूल
हि अनुकूल॥सकल भांति सब कहं सुखद दलन स
हित बिन फूल॥८५॥सधन सगुन सध रमस्त गन
सजन सुसब लमहीप॥तुलसी जे अभिमान बिन ः
तत्रिभुवनके दीप॥८६॥साधन समय सुसिद्ध लहि उ
भय मूल अनुकूल॥तुलसी तीनौ समय सम तेमहि
मंगल मूल॥८७॥रामायन अनुहरत सिष जग भौ
भारत रीत॥तुलसी सठकी कोसुनै कलि कुचालि ः
पर प्रीत॥८८॥सुहित सुखद गुन जुत सदा काल जो
ग दुख होय॥घर धन जारत अनल जिमि त्यागे सु
ख नहिं कोय॥८९॥तुलसी सरबर खंभ जिमि तिमि
चेतन पट माहि॥नहि सूखत पन कुतनसो समुक ः
सुबुध जन ताहि॥९०॥तुलसी झगरा बडेनके बीच ः
परहु जनि धाय॥लहै लोह पाहन दोऊ बीच रुई ः
जरि जाय॥९१॥अर्थ आदि हन परि हरहु तुलसी स ः
हित बिचार॥अंत गहन सब कहैं सुने संतन मत सु
ख सार॥९२॥गहु उपकार बिबिचार पद साफल हानि
बिसूल॥अहो जानु तुलसी यतन बिन जाने दुखमूल

९३॥नीच निरावहिं निरस तरु तुलसी सींचहि ऊख
पोषत पयद समान जल विषय ऊसके रूख॥९४॥
लोक वेदहू लौंदगी नाम भूलको पोच॥धरम राज
जम राज जम कहत सकोच नसोच॥९५॥तुलसी
देवल रामके लागे लाख करोर॥काक अभागे हगि
भरे महिमा भयेउ नथोर॥९६॥भलो कहहिं जाने
विना कीअथवा अपवाद॥तुलसी गांडर जानि जिय
करहुनहरख विषाद॥९७॥तन धन महिमा धर्म जेहि
जाकहँ सह अभिमान॥तुलसी जियत विडंबना
परिनामहु गति जान॥९८॥वड़ो विबुध दरवारतें
भूमि भूप दरवार॥जापक पूजक देखियत सहत
निरादर भार॥९९॥खग मृग मीन पुनीत किय =
बनहु राम नैपाल॥कुन दवाल रावन घरहि सुखद
बंधु किय काल॥१००राम लषण बिजई भये सुनहु
गरीब नेवाज।सुखर वालि रावन गये घरही सहित
समाज॥१०१॥हारे ठट नदै सकहिं तुलसी जेमर
नीच॥निदरहिं वलिहरिचंद कहँ किहु कारकर नद
धीच॥१०२॥तुलसी निज कीरति चहहिं परकीरति
कहे खोय॥तिन्हके मुहु मसि लागिहैं मिटहि
नमरिहैं धोय॥१०३॥नीचे चंग सम जानिवा सुनि
लखि तुलसी दास॥ढील देत महि गिरि परत खैं
चत चढ़त अकास॥१०४॥सहु वीसी कौंची भखै
पुरजन पाँक प्रवीन॥काल छूप केहि विधि करै तुलसी
खग मृग मीन॥१०५॥बढ़े पाप बाढ़े किये छोटे कर
तन जात॥तुलसी तापर सुख चहत विधि पर बहु

तरिसात॥१०६॥सुमति निवारहिं परि हरहिं दल सुसनहु संग्राम॥सकल गये तन विन भये साषी जादो काम॥१०७॥कलहन जान विछोट करि कठिन परम परिनाम॥लगत अनल अति नीच घर जरत धनिक धन धाम॥१०८॥जूकेते भल वूकिवो भलो जीत तें हारि॥ जहाँ जाइ जहँ डाइवो भलो जो करिय विचार। १०९॥तुलसी तीन प्रकारते हित अनहित पहिचान। परबस परे परोस बस परे मामला जान॥१०१०॥दुरजन वदन कमान सम वचन विमुंचत तीर॥सज्जन उर वेधत नहीं छमा समाह सरीर॥१११॥कौरव पंडव जानिवो क्रोध छमाके सीम॥पांचहि मारि नसै सकै सयो निपाते भीम॥११२॥ जो मधु दीन्हेते मरै माहुर देउ न ताउ॥जग जिति हारे परसु धर हारि जिते रघुराउ॥११३॥ क्रोध न रसना खोलिये वरु खोलव तरवारि॥सुनत मधुर परिनाम हित वोलव वचन विचारि॥११४॥तुलसी मीठो समयते मांगी मिलै जे मीच॥सुधा सुधा कर सभय विन काल कूटते नीच। ११५॥पाही खेती लगन वडि रिन कुव्याज मग खेतु॥बैर आपने वडेनते कियों पांच दुख हेतु॥ ११६॥रीझ खीझ गुरु देत सिष सिषहि सुसाहेव साध॥तोरि खाय फल होय भल तरु काटे अपराध ११७॥ चढो वधूरहि चंग जिमि ज्ञानते सोक समाज। करम धरम सुखसम्पदा तिमि जानिवो कुराज॥११८॥ पेट नफूटत विन कहे कहे न लागत देर॥वोलव वचन विचार जुत समुकि सुफेर कुफेर॥११९॥ प्रीत सगाई

सकल विधि वनिज उपाय अनेक॥ कलबल छल
कलिमल मलिन डहकत एकहि एक॥२२०॥ दंभ
सहित कलिधर्म सब छल समेत व्यवहार॥ स्वारथ
सहित सनेह सब रुचि अनुहरत अचार॥२२१॥
धातु वधी निरुपाधि वर सदगुरु लाभ सुमीत॥
दम्भ दरस कलि काल महं पोथिन सुनत सुनीत।
२२२॥ फोरहिं मूरख सिल सदन लागे अढुक पहार।
कायर कूर कपूत कलि घर घर सरिस उहार॥२२३
जौं जगदीस तौ अति भलो जौं महीस तो भाग॥
जन्म जन्म तुलसी चहत राम चरन अनुराग॥२२४
का भाषा का संसकृत विभव चाहिये सांच॥ काम
जोआवै कामरी काले करिय कमाच॥२२५॥ वरन
विसद मुक्ता सरिस अर्थ सूत्र सम तूल॥ सत सैया
तग वर विसद गुन सोभा सुख मूल॥२२६॥ वर माला
वाला समति उर धारै जुत नेह॥ सुख सोभा सर-
साय नित लहै राम पति गेह॥२२७॥ भूप कहहिं लघु
गुनिन कहं गुनी कहहिं लघु भूप॥ सहि गिरि गत
रोग लखत जिमि तुलसी खच्छ सरूप॥२२८॥ दोहा
चारु विचारु चलु परिहरि वाद विवाद॥ सुकृत सींम
स्वारथ अवधि परमारथ मरजाद॥२२९ इति श्री मद्गो
साईं स्वामी तुलसी दास विरचितायां सप्त शतिका
यां राजनीति प्रस्ताव वरननो नाम सप्तमः सर्गः॥

मुनशी नवल किशोरके लखनऊके छापेखानेमें छपी
लिखितं कालिका प्रसाद कायस्थ जौलाई सन १८७३ ई

Baksha Sastra
No: ৭